## 1

ले चल मेरे नाविक मुझको, दिये भुलावा धीरे धीरे।
जग की रीति न कुछ भी जानूं, नयना रोवें तुमको टेरे।
स्वप्निल दुनिया दर्द बिखेरा, छिपा कहाँ न जाने सुबेरा।
जख्म लगे किसको दिखलाऊँ, चाह रहा मैं प्यार तुम्हारा।

पथ दूभर अनजानी गलियां, चैन न आये छिपो न छलिया।
मेरे प्राण पुकारे तुमको, दे दे मुझको अपनी छैंया।
छाया है सब ओर अंधेरा, कह तो दे यह तू है मेरा।
बरसे अंखियाँ चाह प्यार की, चरण पडू. यह जीवन तेरा।

मन्द बुद्धि हूँ ज्ञान तुम्ही दो, मुझे बना लो अपना सेवक।
सकल सृष्टि के तुम हो मालिक, क्यों रोता मैं तेरा बालक।
मेरे नयनों में बस जाओ, सारे मेरे ताप मिटाओ।
मर्जी तेरी जहाँ ले चलो, पर मुझसे ना नयन चुराओ।

## 2

चैतन्यघन आनन्दघन, कैसे रिझाऊँ तुम कहो।
जो नीर बहते नयन से, वे कह रहे दिल में रहो।
दृष्टा जगत के देखते, पर कुछ न कहते तड़फते।
ऐसी क्या दुनिया तेरी, सुपने यहाँ पर मचलते।

तुम ले चलो मर्जी जहाँ, पर प्यार तुम देना सदा।
बालक तुम्हारे अबल हैं, चाहूँ तेरा संबल सदा।
दरिया तुम्हारा नाचते, जायें कहाँ ना जानते।
सुमरण करे तेरा सदा, तुम साथ हो यह मानते।

छवि हो तुम्हारी नयन में, कितनी रातें काली हो।
डर ना लगे रूला न अब, जीवन के तुम माली हो।
चैतन्यघन हो तुम सदा, जिसने भी तुमको है जपा।
सब टूट जाते भ्रम यहाँ, हरि की सदा मिलती कृपा।



## 3

हरि हरि कहें बहें यह नयना, संग मेरा तुम कभी न तजना।
करूणासागर दास तुम्हारा, प्यार सदा तुम देते रहना।
सूख गया जिस डाली का रस, उसमें फूल कभी ना खिलता।
डाली क्या मुरझाये बगिया, कृपा होय उसमें रस झरता।

दुनिया रंग बदलती हरपल, ना जाने होवेगा क्या कल?
लिये भविष्य की चिन्ता फिरते, अंखियों से गिरता रहता जल।
दर्द लिये हम दिल में चलते, काटे कटती है ना रैना।
अपना कौन पराया जग में, सारा जीवन है इक सुपना।

स्वागत कैसे करूँ तुम्हारा, सूखा दिल ले कर मैं हारा।
मैं हूँ अबल शक्ति के दाता, चाहूँ तेरा सदा सहारा।
बसो नयन में प्रीति जगा दो, तृष्णा सारी दूर भगा दो।
चल चल गिरता बहते नयना, शरण तुम्हारी प्यार हमें दो।

## 4

हरी हरी तुझे जपे हम, चाह क्या ले फिर रहे हम।
स्वप्निल सारी है दुनिया, घूमते बैचेन हो हम।
नीर नयनों से ढुलकते, खोजते हम तुझे फिरते।
फंस जगत जंजाल में हम, भूल तुमको हम बिलखते।

नाथ हम तुमको मनाये, चाह सुपनों से न जाये।
ज्योति हरि जलती रहे नित, अश्रु नयनों के चढ़ाये।
दास मैं हूँ हरि तुम्हारा, चाहूँ मैं तेरी छैंया।
हरि मुझे ना भूल जाना, पडू. तेरे नाथ पैंया।

जगत रचैया तुम पालक, प्यार मिले तेरा बालक।
घूमता अनजान गलियाँ, करो कृपा पहुँचू तुझ तक।
नाव कर दे पार मेरी, सुन ले खेवट कन्हैया।
कुछ सुना दे गीत प्यारे, ढले संध्या देख अंखिया।

## 5

हरि हरि भज मन आये चैना, टूटें भ्रम किससे क्या कहना।
गिरती उठती लहर यहाँ पर, हरि हरि भज हरि में ही बहना।
दिल का दर्द दिखावे किसको, हरि को जप देखे वह सबको।
बहते आंसू उसे चढ़ा दे, जपता जा ना छोड़ हरी को।

वह ही अपना भाग्य विधाता, कठपुतली सा हमें नचाता।
इन सांसों का वह ही मालिक, जोड़ो मन हरि से ही नाता।
दुख के बादल फटें न उस बिन, सूना सूना लागे हरि बिन।
झिलमिल करती सारी दुनिया, पकड़ उसे बह ले जग में मन।

आदि सत्य वह अन्त सत्य है, वर्तमान में हमें नचावे।
डोरी हाथ उसी के पगले, जब चाहे तब वह ले जावे।
हरि को तज भागे कातर बन, मृगमरीचिका में ना पड़ मन।
दुनिया स्वप्निल रंग बदलती, हरि जप सुमरण कर बह ले मन।

## 6

किसे कहूँ मैं अपना साथी, इस जग में मैं फिरूँ उदासी।
पत्थर दिल तेरा क्यों इतना, बरसे नयना क्यों मैं प्यासी?
दीखे ना तू छिपा कहाँ है, दिल मेरा तो सदा जला है।
कैसे दर्द दिखाऊँ अपना, विनय करूँ दे पता कहाँ है?

इस जीवन के तुम ही मालिक, सांसे हरपल तुमको भजती।
नयन देखें राह तुम्हारी, मिलो नहीं अंखियाँ यह रोती।
मुझे पिला दे इतनी मदिरा, जग के भूलूँ सभी नजारे।
मेरे नयनों में बस जाओ, करूँ समर्पण तारे मारे।

प्यास मिटा दे मैं हूँ प्यासा, सूनी डगर तुझी से आशा।
चरणों में मै पड़ा तुम्हारे, अब ना दे तू मुझे निराशा।
जनम मरण बन्धन सब तेरा, दिल रोये प्रभु करो सुबेरा।
अपना प्यार मुझे तुम दे दो, खिले फूल जो प्रभु है तेरा।



## 7

पी रटो मन पी रटो मन, बाजती सब ओर पी धुन।
न किनारा कोई भी मन, पी रटो बहते रहो मन।
नाचता सागर लहर तू, मन करो सुमरण उसी का।
कौन तू मर्जी उसी की, देखो अन्तस वह मन का।

छोड़ मैं सब ओर छलिया, तेरी रोती यह अंखियां।
साथ तेरे पी रटो मन, यह बदलती रंग दुनिया।
दन्श जग के जब सताये, पी न बिन कोई लुभाये।
पी रटो मन शान्ति आये, दीप तम में वह जलाये।

आदि वह ही अन्त वह ही, कुछ पलों का खेल सारा।
छोड़ नौका बहो उसमें, जाती ले उसकी धारा।
कितने सुपने संजो ले, पी बिना ना चैन आये।
सुख दुखो की होली जलती, धन्य जो पी को मनाये।

## 8

हरि सुमरण कर मोह मिटेगा, मन तू समझ नहीं क्यों पाता।
टूटे सभी व्यर्थ से नाता, सोच सोच तू पागल होता।
चिन्ता उपजे जितना सोचे, मोह अज्ञान सब को हर्ता।
जप हरि सदा साथ वह तेरे, तृष्णा को तज हरि है भर्ता।

जप हरि छूटे सब चिन्ताएँ, नैया तेरी पार लगाता।
चिन्ता छोड़ जपो मन हरि को, ज्ञान ज्योति को वही जलाता।
कितनी लहरें दौड़ रही है, गिरती उठती करें तमाशा।
जपता जा बस में तेरे क्या, करता पूरी वह ही आशा।

स्वप्निल दुनिया भूल गया तू, अपना जोड़ हरी से नाता।
पल दो पल का रैन बसेरा, धन्य जाम हरि का पी बहता।
करो समर्पित निज को जी लो, मर्जी उसकी वैसे रह लो।
विनय करो बल मांग हरी से, राजी रहे शरण में रख लो।

तप है यही करो ना शिकवा, उसकी मर्जी में मन हो जा।
दास उसी के चलती उसकी, मन हरि के चरणों में पड़ जा।
काली छाया यहां डरावे, मांग सदा मन हरि का साया।
ज्ञान ध्यान सबका मालिक वह, जग में काहे तू भरमाया।

## 9

बहते नयनों से आंसू है, तुम लाज राखना हरि मेरी।
मालिक तू कौन यहाँ पर मैं, नयनों में चाहूँ छवि तेरी।
तेरी यादों में अमृत है, ना भूले हरि हम जीवन में।
बहते रहते आंसू मेरे, पाये तुमको इस जीवन में।

हरि हरि गा तुझे मनाये हम, बरसे मेरे नयना रिमझिम।
हरि प्यार सदा अपना देना, बिन कृपा नहीं चल पाये हम।
तेरा ही नाम सदा प्यारा, जीवन का तू ही आधारा।
मृगतृष्णा में जो भी उलझा, जीवन उसका होता खारा।

हरि रूठ नहीं जाना मुझसे, बस जाओ मेरे नयनों में।
तुम बिन रोती रहती अंखियाँ, ना छोड़ हमें मझधारे में।
ले चल नाविक नैया मेरी, डर लागे इस अंधियारे में।
मेरे दिल में तुम सदा रहो, दे प्यार झुका सिर चरणों में।

## 10

तेरा विरह हुआ मैं पागल, नयना बरसे जैसे सावन।
अपनी बन्शी मुझे सुना दे, नाचूं गाऊँ सुन बन्शी धुन।
अपरंपार तेरी लीला है, बरस रही मेरी अंखियां है।
अपना प्यार मुझे तू दे जा, कहाँ छिपा बैठा छलिया है।

तेरी मर्जी से है आना, बना हुआ तू क्यों बेगाना।
प्यासे प्राण पुकारें तुमको, देख हमें ले बहते नयना।
तुम बिन चैन न आये दिल को, खोजूं कहाँ बता दो हमको।
कण कण पर है राज्य तुम्हारा, चाह प्यार की दे दो हमको।

बुद्धि दाता ज्ञान प्रदाता, बन्धु मित्र तुम पिता हो माता।
कैसे पूजा करूँ तुम्हारी, नीर नयन से मेरे आता।
हरि हरि धुन गूंजे कानों में, बस जाओ मेरे नयनों में।
जग के दुखड़े नहीं सतावे, ध्यान नहीं टूटे तुम संग में।



## 11

सोंचता है मन यहाँ क्या, जान रहना ना यहाँ है।
मन हुआ बैचेन तू क्यों, जप हरी का यह जहाँ है।
जप हरी वह शान्ति सागर, व्यर्थ की चिन्ता मिटेगी।
लहर बन बह दरिया तेरा, समझ से मुक्ति मिलेगी।

जी रहे निज चाह में सब, ले विवशता रो रहे सब।
क्या शिकवा किससे करना, जप उसे वह साथ है रब।
आदि वह ही अन्त वह ही, सत्य वह जानो सदा है।
कुछ पलों का खेल यह है, ना कभी होता जुदा है।

हरि जपो जपते रहो मन, वह ही मिटाता है चुभन।
नाम उसका जान सांचा, बन नीर यह होते सुमन।
प्रीति मन हरि से बढ़ा ले, देख मन सब ओर छाया।
नाम जप भय सारे मिटते, संग रहता उसका साया।

## 12

दिल लगाते फिर रहे हैं, नीर नयनों से बहें हैं।
दास तेरा मैं हरी हूँ, प्यार को हम चाहते हैं।
सुहानी दुनिया तुम्हारी, नयनों से आता पानी।
तुम बिना अच्छा न लगता, कर रहे प्रतीक्षा दानी।

माना स्वप्निल है दुनिया, न कटे पल आ जा छलिया।
देख ले नजरें उठाकर, बहती हैं मेरी अंखियां।
दर्द कितना है जगत में, कुछ न आता है समझ में।
तू पिला दे मुझे इतनी, डूबूँ मैं तेरे रस में।

ना हमें मिलता किनारा, बहती है तेरी धारा।
बिलखते हम भूल तुमको, आंख से जल बहे खारा।
द्वार पर तेरे खड़े हैं, चाहते कृपा तुम्हारी।
अर्चना के फूल सूखे, पर सदा से मैं तुम्हारी।

## 13

चला नहीं जाता प्रभु मैं, मांगता तेरा सहारा।
जी रहा अज्ञान में मैं, बह रही है अश्रु धारा।
मेरे जीवन के सर्जक, नाथ मैं बालक तुम्हारा।
ज्ञान का दीपक जला दो, चल यहाँ मैं नाथ हारा।

हरी हरी जपें सदा हम, पा रहे दुख भूल तुमको।
सांस तेरा गीत गाये, दो सहारा मिलो हमको।
सृष्टि के तुम हो रचियता, झरती हैं मेरी अंखियां।
देख लो नयना हमारे, प्यार बिना सूखे बगिया।

नाचता सागर लहर क्या, पूछती तू छिप गया क्या?
दर्द मुझे इतना देकर, आ रहा तुमको मजा क्या?
प्यार दे इतना हमें प्रभु, साथ लागे चल रहा है।
इस अंधेरी रात में हरि, देख आंसू बह रहा है।

## 14

हरि मिलो जल नयन बहता, जानो घट की क्या कहता?
दास मैं हूँ हरि तुम्हारा, लाज राखो चरण पड़ता।
हरि जपें तुम साथ देना, भीगे यह मेरे नयना।
दिल में बस जाओ मेरे, ना विलग हो यही कहना।

दर्द तूने जो दिया है, अब सहा न जाता मुझसे।
हरि मैं बालक तुम्हारा, चाहता न रूठो मुझसे।
दुनिया तेरी रंग कितने, तुझे खोजूँ पर न दीखे।
प्यार दे दे मुझे अपना, क्यों नहीं तू मुझे दीखे।

नयन मेरे बरसते हैं, पास में कुछ भी नहीं है।
मैं रिझाऊँ तुझे कैसे, ज्ञान भी इतना नहीं हैं।
झोली खाली पर आया, ना सहारा और कोई।
द्वार तेरे मैं पड़ा हूँ, चाह उठूं न आँख रोई।



## 15

चल निभा दे तू यहाँ पर, फिर न जायें हम कहाँ पर।
स्वप्न सा संसार सारा, बरसे यह अंखियाँ झर झर।
फानी सब कुछ ना दुनिया, पोंछ आंसू दे खुशी तू।
प्यार के गा गीत मन तू, रंग भर ले प्यार के तू।

उठ यहाँ गिरती लहर है, ना किसे कल की खबर है।
कितने सुपने संजोते, आँख रोती टूटते है।
प्यार को दिल में बसा ले, कुछ भी अपना न यहाँ है।
घूमते मैं ले यहाँ हम, तन भी अपना जा रहा है।

करो हरि का ध्यान बह ले, बीत जायेगी उमरिया।
जमाना यह रंग बदले, डर मिटें जप ले संवरिया।
जप हरि नहीं भूल उसको, संग तेरे वह सदा है।
लहर तू है नाच उसका, सब जगह वह तू कहाँ है?

## 16

बंशी बाजे लीन होऊँ, ध्यान तेरे को तरसता।
इसमें भीगूँ मैं सारा, नीर यह रिमझिम बरसता।
आ मिलो मोहन पुकारूँ, तुम बिना यह रात फीकी।
मैं कहाँ जाऊँ जगत में, प्यार दे दे सुनो मन की।

ढूंढते तुमको फिरे हम, पा नहीं तुमको सके हम।
मिट यहाँ जाते जगत में, मैं नहीं ना कह सके हम।
सत्य मैं ना खेल तेरा, आस क्या ले चल रहे हैं।
स्वप्न सा संसार सारा, मृग तृष्णा में फंसे हैं।

आँख भीगी लाज रखना, एक तेरा ही सहारा।
प्यार पाने को तड़फता, जानो बालक तुम्हारा।
नयनन में बस जा मेरे, रात काली हो सुबेरा।
खिलती मुरझाई बगिया, गीत गाती पवन तेरा।

## 17

चलते चलते मिट जाना है, मिटते मिटते हरि पाना है।
फूल खिलेंगे इस पथ पर मन, दुख मिटते मन लय होना है।
स्वप्निल दुनिया पकड़े क्या तू, आज यहाँ कल नहीं यहाँ तू।
नयनों से गंगा बहती है, दर्द लिये फिरता रहता तू।

किस किससे है यहाँ शिकायत, घूमे सभी वासना निज ले।
साथ निभा दे मन हँस हँस कर, मन में दीप जला हरि का ले।
जप ले मन का सुमन खिलेगा, नहीं डरावेगा भय हमको।
दो दिन का यह रैन बसेरा, खेल यहाँ जाना हरि घर को।

हरि हरि जपो उसी की दुनिया, कौन यहाँ तू सब वह छलिया।
सांच कहूँ मन चैन मिलेगा, आंसू से भीगी यह अंखियां।
गिरते आंसू याद करो हरि, ठौर वही है इस दुनिया में।
बहो लहर बन इस दरिया में, लिये जा रहा है निज घर में।

## 18

छोड़ कहाँ मैं तुमको जाऊँ, तुम ही मेरे भाग्य विधाता।
मात पिता तुम सब कुछ मेरे, नीर नयन से मेरे आता।
पूजें तुझे मनायें तुमको, पीड़ा अपनी तुझे दिखायें।
दुख भंजक है नाम तुम्हारा, दुख हर लो जिय भर भर आये।

अनजाना पथ घिरा अंधेरा, दीप जला दो जीवन तेरा।
मेरी नैया के तुम खेवट, प्यासे प्राण कहें तू मेरा।
हरि हरि हरि हम तुझे मनायें, जीवन अपना सफल बनाये।
हिचकोले खाती नौका को, विनय करूँ तू पार लगाये।

इस जीवन का दर्द यही है, जल में रह ना प्यास बुझी है।
कहाँ छिपा तू प्रियतम मेरा, आ कुछ पल फिर यहाँ नहीं है।
हरि हरि आओ रास रचाओ, खुशियां दे गम दूर भगाओ।
तेरी दुनिया तू ही जाने, मन मन्दिर से कभी न जाओ।



## 19

मैं कौन तू है कौन, आये न तुम बिन चैन।
अंखियों से नीर बहें, लगता जगत यह मौन।
एक तू सहारा है, ना और किनारा है।
दुख के बादल छंटते, बस नाम सहारा है।

गाते तेरे नगमें, ले दर्द यहाँ बहते।
अपना न पराया कुछ, सुन दिल की कुछ कहते।
स्वीकार करो पूजा, दिल मेरा है रूखा।
बालक पर तेरा हूँ, दे प्यार न रख सूखा।

प्रभु जपे सदा तुमको, ना भटके अब हम तो।
तुम लाज रखो मेरी, संध्या ढलती अब तो।
आ जा आ जा प्रियतम, यह प्राण पुकार रहे।
चरणों में शीश झुका, तुम बिन अब हम न रहे।

## 20

हरि तुझे मनाये हम हरपल, आंसू बरसें मेरे रिमझिम।
तुम कहाँ छिप गये हो छलिया, अब चला न जाता ना है दम।
चरणों में रखकर शीश मुझे, रो लेने दो मेरे भगवन।
पतवार तुम्हारे हाथों में, ना रोक सकूँ यह बहे नयन।

अपरम्पार तुम्हारी लीला, ना जान सका कोई जग में।
आंखों में आंसू दर्द लिये, मैं भटक रहा हूँ इस जग में।
हरि चैन मिले बन्शी बाजे, खिल जाये मुरझाई बगिया।
बहते आंसू खोजें तुमको, न भूल मुझे तू मेरा जिया।

दे प्यार चाह इस जीवन की, अनजानी सारी है गलियां।
सब ज्ञान ध्यान का मालिक तू, तू दे विवेक हरषे जीया।
बीते घड़ियां हरि हरि कहते, मुझमे कुछ दम ना ओ छलिया।
ले चल मर्जी जैसी तेरी, पर बसो नयन ना जिया जला।

## 21

हरि नीर मेरे बहते, कुछ कह नहीं सकते।
नयन में तुम ही बसते, विनय मेरी सुनते।
खाई जगत में ठोकर, अंखियां बही झर झर।
किसको दिखायें यह दिल, सुनता न तू रहवर।

यह पार कर दे नौका, तेरा बस सहारा।
बालक हरी तुम्हारा, गिरता चरण हारा।
जग के रचैया पालक, मुझको बना सेवक।
न हो कोई भी शिकवा, गीत पहुँचे तुम तक।

कर्मों में हरि उलझ कर, न हो कभी भटकना।
बह रहे मेरे नयना, मुझे अबल समझना।
मैं हूँ शरण तुम्हारी, आ दिल में मुरारी।
ना ज्ञान कोई मुझको, दीपक जला हारी।

## 22

दिन आते और यहाँ जाते, नयनों में आंसू आते है।
ना पूछ रहा हमको कोई, क्या चाह लिये हम जीते हैं।
चलते जाना यह डगर बड़ी, कितनी ही बरसें नयन झड़ी।
अपना तू दर्द दिखाये क्या, पीड़ा की चादर यहाँ पड़ी।

आंखों में सबके झांक यहाँ, दे सके खुशी तू बांट यहाँ।
दो दिन का स्वप्निल मेला है, हरि जप ले आवे चैन यहाँ।
अपना न कोई पराया है, मनुआ जग में भरमाया है।
प्यासे प्राणों की प्यास हरी, जप ले हरि क्यों अकुलाया है।

न कोई किनारा अंधियारा, लगता  जीवन में सब हारा।
ऐसे में भी हरि दिल में हेा, डर लगे न बहता हरि धारा।
हरि प्यार मांग हरि में जी ले, हरि छोड़ मुझे न सब ले ले।
तेरे चरणों में सिर रखता, ना और परीक्षा अब तू ले।



## 23

जिन्दगी में कौन अपना, चल रहा है एक सुपना।
मिल यहाँ सारे बिछुड़ते, सत्य हरि ना छोड़ जपना।
आदि वह ही अन्त वह ही, सत्य वह सब ओर छाया।
पकड़े दामन जो उसका, तप्त पथ पर मिले छाया।

हरि जपो जपते रहो मन, प्रीति मन उससे बढ़ा लो।
बीतेगी सारी घड़ियां, प्राण प्यासे याद कर लो।
मन हरि जपो स्नान कर ले, बह रही बस एक धारा।
दुख हरे शीतल हो काया, जल रहा संसार सारा।

हरि जपो जपते रहो मन, और क्या सांचा यहाँ धन।
जो यहाँ है आज अपना, पल में बदले रंग यह मन।
बन लहर बह ले यहाँ मन, तन उसका अपना क्या मन।
नयन में उसको बसा ले, खेल कुछ पल का यहाँ मन।

## 24

हरि जपो जाने नहीं कुछ, सफर कहाँ यह जायेगा?
पी ले मन मदिरा हरि की, पथ में ना दुख पायेगा।
डगर लम्बी है जगत की, काँटे यहाँ बिखरे बहुत।
पकड़ ले मन हरी दामन, तू स्वप्न है उसका जगत।

जप हरि बरसेंगे आंसू, वह ले चले हरि पास में।
जग से क्या रखता आशा, मन हरि बसा ले नयन में।
हरि जपो जपते रहो मन, यहाँ तेरे बस कुछ नहीं।
नाव अपनी छोड़ दे तू, हरि ही संभाले सब वही।

जब घिरे दुख की घटाये, कौन तुझको पथ दिखाये?
छोड़ जाते संगी साथी, हरि बिना ना चैन आये।
जप हरि खेवट तुम्हारा, कौन जीता कौन हारा।
मैं हटा बह ले लहर बन, कुछ पलों का खेल सारा।

## 25

हरि ही जपता हरि को रहता, बना अबल आंसू ढलकाता।
ब्रह्म स्वयं और सृष्टि रचियता, बन कोल्हू का बैल घूमता।
क्या जीवन का चक्र चल रहा, घूम रहा खुशियां लेने को।
सुख का सागर कहलाता है, फिर भी पकड़े क्षण भंगुर को।

हरि का ही सब ओर नजारा, फिर भी नीर बहाये खारा।
कण कण में वह बसा हुआ है, अलग अलग दुख भोगे सारा।
मन हरि जप हरि को जपता जा, हरि ही अपना नाच दिखाये।
देखे स्वयं नाचता हरि ही, पागल मन क्यों समझ न पाये।

प्राण न जिसमें लेवे सुपने, ऐसा चक्र चलाया मन ने।
स्वप्निल है यह सारी दुनिया, हरि जप हरि पा टूटें सुपने।
हरि हरि जपो यहाँ सब हरि है, सांसे कुछ पल घूम रही है।
कर हरि पूजा हरि को पा ले, हरि बिन कुछ भी यहाँ नहीं है।

## 26

चल चल गिरे बैचेन दिल, न पा सके तुमको यह गम।
शाम ढलती जा रही है, तुम देख लो आंख यह नम।
किसको जगत में हम कहें, कौन अपना है पराया।
सब पलटते रंग अपना, इन नयन में नीर आया।

हरि कृपा की चाह हरपल, देख लो बालक तुम्हारे।
थाम लो बैयां हमारी, नीर बहें तेरे द्वारे।
सृष्टि सारी के रचैया, मांगू मैं तुमसे छैया।
प्यार तेरा चाहता मैं, प्यासी दर्शन की अंखियां।

तप्त पथ बैचेन दिल, गिरता प्रभु नयनों से जल।
तुझे मनाऊँ कैसे मैं, हरी कृपा हो आऊँ चल।
करती है मेरी अंखियां, पल को ना बिसराऊँ मैं।
मन को समझाऊँ कैसे, ज्ञान दे तुझे पाऊँ मैं।



## 27

बह रही अंखियां न आये, दिल बता कैसे लगाये?
स्वप्न सा मिटता सभी कुछ, दिल तड़फता प्यार पाये।
नयन आंसू हरि पुकारूँ, ना सहारा और कोई।
डूबता ही जा रहा हूँ, तुम बिना देखे न कोई।

थक कर टूटे हैं पल पल, चल रहे दीखे न मन्जिल।
पार कर नैया हमारी, बालक तुम्हारे हम अबल।
दास तेरा मैं भटकता, प्यार पाने को तड़फता।
लाज राखो हरि हमारी, तुम सुनो, न कोई सुनता।

न छिपो तुम प्यारे छलिया, डूबूँ मैं तुझ में रसिया।
कितने जन्मों से भटकूँ, करो कृपा बहती अंखियां।
हरी जपे हरि को गायें, दिल सदा तुझ में लगाये।
नयन में हरि बसो मेरे, चाह दिल की तू न जाये।

## 28

आज तो जी लो क्या कल हो, यहाँ जानते कुछ नहीं।
पी लो मन हरि की सुधा को, इसमें जो ना है कही।
डोर हरी के हाथ में है, बना कठपुतली नाचे।
कौन तू जाने न कुछ भी, मैं हटा न आंख मीचे।

तू यहाँ किस किसको पकड़े, कोई ना हाथ आये।
वासना ले निज की फिरते, लहरें आ लौट जायें।
चल अकेला नहीं झमेला, जो मिले उसे निभा दे।
कुछ ही पल का खेल सारा, मृगतृष्णाएँ हटा दे।

हरी जपो जपते रहो मन, सत्य वह सांचा है धन।
आदि अन्त वह तो सदा है, चक्र उसका घूमता मन।
हरि बसा नयनों में मन तू, जायेंगी भीग अंखियाँ।
ले चलेगी पास हरी के, मिले तुमको फिर छलिया।

## 29

पूछता मैं कहाँ मेरा घर, बरसे अखियां पता ना डगर।
पता बता दो ज्ञान जगा दो, अंधियारा है दे प्रकाश कर।
हरि हम तुझे मनाये कैसे, विधि ना जाने आंसू बहते।
कृपा सदा हरि हम पर रखना, चरण तुम्हारे हरि हम पड़ते।

सृष्टि रचैया जग के पालक, अंखियाँ मेरी बरसे झर झर।
प्यार मिले खिल जाये उपवन, सुन पाऊँ मैं बन्शी के स्वर।
तुम बिन बरसे मेरी अंखियाँ, मुझसे छल क्यों करता छलिया।
बालक तेरा नाथ अबल मैं, जग की ना जानूँ मैं गलियां।

हरि हरि जपूँ तुझे ही पूजूँ, चाहूँ अपने नयन बसा लूँ।
छोड़ मुझे तुम कभी न जाओ, प्यार तुम्हारा ले मैं जी लूँ।
हरि सब लीला चले तुम्हारी, प्यास जाये मिट पिला पानी।
ना कुछ भी है मेरे बस में, नयन बहाते हैं बस पानी।

## 30

दो पल के सुख को पाने को, इस जग में हम घूम रहे हैं।
नहीं किनारा कोई मिलता, इन नयनों से नीर बहे हैं।
हरि भज हरि भज मन ले तू रस, सारा जग यह बहता पानी।
यहाँ बदलते रंग अनेंको, मत पकड़ो हरि ही है दानी।

हरि सुख जग दुख चिन्तन कर ले, जैसा चाहे वैसे जी ले।
हरि शाश्वत जग में क्या पकड़े, जितना चिन्तन जग का रो ले।
लिपटेगा जग से उतना दुख, हरि को जप ले वह ही है सुख।
आदि अन्त वह सदा सत्य है, बिन उसके ना यहाँ कहीं सुख।

धूप छांव का खेल यहाँ है, आज यहाँ कल जान कहाँ है?
अपने जब बेगाने लगते, सोच सोच मन सत्य कहाँ है।
हरि चिन्तन कर छिपा हृदय में, देख रहा यह जग में सुपने।
जपे स्वयं जो उसको लख ले, मिटे है दुख जपा है जिसने।

हरि हरि जप बह लहर बना तू, ले जाये सागर की मर्जी।
ज्ञान ध्यान जीवन सब उसका, छोड़ सभी क्या तेरी मर्जी।
हरि जप हरि जप प्रीति बढ़ा ले, जगत उसी का शीश झुका ले।
अपना क्या सब हरि की लीला, मैं को तज जप नयन बसा ले।



## 31

मन हरि हरि गा तज सब आशा, ले जाती सबको हरि धारा।
लहरों से बन मिटे सुपन सब, आंखों से बहती है धारा।
लहर बनी सागर ही जाने, मर्जी ना कोई भी जाने।
मैं को छोड़ लहर सा बहता, हरि के वह होते दीवाने।

हरि हरि जपो मिले सुख इसमें, डर लागे ना फिर इस जग में।
जप दिल में वह ज्ञान जगाये, लगे साथ वह उठते नगमें।
किसको पकड़े किसको छोड़े, यहाँ भागते सब ही जाये।
हरि की लीला समझ यहाँ सब, क्यों अपना तू जिया दुखाये।

हरि जप हरि जप स्वप्निल दुनिया, चैन मिलेगा जप ले छलिया।
आदि अन्त वह सदा सत्य है, उस बिन रोती है यह अंखियां।
दुख मिटते संताप हरेगा, सोया छलिया तुझे मिलेगा।
पकड़ उसी की मन तू छाया, हरि हरि जप पथ दन्श मिटेगा।

## 32

प्यासा मन तड़फे है हरि को, कैसे जीये उस बिन हम तो।
सूखें नहीं नयन के आंसूं, थके यहाँ हम गिरते अब तो।
क्योंं यह जीवन सांसे लेता, ढूंढू तुझे पता ना चलता।
ज्ञानी करे ज्ञान की बातें, दिल जलता यह हरपल रोता।

अज्ञानी हम मन्दबुद्धि हैं, बालक पर तेरे हैं हम तो।
पार लगा दो नैया मेरी, केवट बन कर आओ अब तो।
दास तेरा शरण तुम्हारी, तुम ना हरि मुझको ठुकराओ।
धूप दीप नैवैद्य नहीं है, कुछ ना जानूं प्यार दिखाओ।

बिखरा यहाँ जगत में क्रन्दन, पाप पुण्य कर्मों के बन्धन।
समझ न पाऊँ तेरी लीला, करो कृपा तुम हो सुखनन्दन।
ज्ञानी ज्ञान तुझी से पायें, तुम ना रूठो तुझे मनाये।
इतनी विनती सुनो हमारी, सदा नयन मेरे बस जाये।

## 33

हरि जपो जपते ही रहो मन, नौका तेरी पार लगाये।
कौन देखे बहें जो आंसू, प्यास जान बस हरी बुझाये।
दिल जले जलता ही रहेगा, कोई भी कुछ नहीं कहेगा।
अपनी अपनी नियति लिये सब, जाने ना क्या भाग्य करेगा।

ढलती है यह संध्या अब तो, याद नहीं क्यों हरि को करता।
बतला तेरे हाथों क्या है, खेल कुछ समय का तू करता।
चल रहा संसार यह सारा, टूटे सुपने मैं तो हारा।
क्या सुनाऊँ अपनी कहानी, छोड़ो सब बन हरी दुलारा।

ध्यान लगा ले मन तू हरि का, ले जायेगी तुझको धारा।
हरि बिन चैन न आये दिल को, बहा रहा क्यों आंसू खारा।
हरि जपो जपते ही रहो मन, हरि जप मन का सुमन खिला ले।
मिटते दुख बाजेगी बन्शी, नाचे काया शीश झुका ले।

## 34

जप ले मन तू ओम ओम को, इस जीवन का नहीं ठौर है।
बहता जा ले जाती धारा, जाने न क्या कोई छोर है।
ओम ओम जप नहीं यहाँ कुछ, स्वप्निल दुनिया मिटता है सब।
जप मन को बहला ले अपना, अंखियां रोये ढूंढे यह रब।

माया अपना चक्र चलाती, फंस उसमें रोवें दिन राती।
जपो ओम टूटें यह कड़ियां, पवन ओम संगीत सुनाती।
जन्म धरा पर हरि की लीला, लिये हुए सब अपनी पीड़ा।
दुखभंजक जप ओम यहाँ पर, कर स्वीकार देख सब क्रीड़ा।

ओम ओम जप वही सभी कुछ, कठपुतली हम नाच नचाये।
ज्ञान ध्यान सबका वह मालिक, जैसा चाहे सुरति जगाये।
जपो ओम मिल जाये सम्बल, गाती दशों दिखा उसकी धुन।
मन तू कौन एक है झौंका, प्यास मिटेगी उस बिन ना मन।



## 35

हरि हरि जप बरसेगी अंखियां, खिलती फिर मुरझाई बगिया।
हरि का जिसने नाम लिया है, डर न लगे मिल जाती छैया।
जग है यह इक बहती धारा, हरि बिन सब कुछ होता खारा।
दिल में दीप जले जब हरि का, मिटता तब सारा अंधियारा।

आये हम क्या लिये प्रयोजन, नाचें गायें फिर खो जाये।
हरि से प्रीति लगा ले मन तू, दन्श जगत के नहीं सताये।
हरि बिन रोती हैं यह अंखियां, निर्मोही पर प्यारा छलिया।
प्रीति बढ़ा ले पागल ना बन, पार करेगा तेरी नैया।

हरि हरि जपो उसी की दुनिया, तू है कौन नाचता छलिया।
ज्ञान ध्यान वह सबका मालिक, जपो उसे खेवे वह नैया।
सारी दुनिया है यह स्वप्निल, इसी स्वप्न में हरि से ले मिल।
दुःख मिटेंगे सारे तेरे, हृदय कमल जायेगा फिर खिल।

## 36

नयना तरसे तुमको मिल ले, इस जीवन की प्यास बुझा ले।
कहाँ छिपे तुम प्यारे छलिया, अंखियां बरसें चाहें पा ले।
अगम अगोचर पार न तेरा, ढूंढे तुमको पर मन मेरा।
पार लगा दो मेरी नैया, शरण तुम्हारी करो सुबेरा।

हरि हरि कहते बीते जीवन, इस जीवन के तुम ही हो धन।
यहाँ नचावे माया तेरी, अंखियां बरसे जैसे सावन।
दास तुम्हारा लाज राखना, ना भटकूं मैं इस मेले में।
प्रीति बढ़े हरि हरपल तुमसे, बसो सदा मेरे नयनों में।

जीवन तेरा बालक तेरे, तम हर लो पथ हमें दिखा दो।
तेरी सदा करें हम पूजा, अज्ञानी को ज्ञान तुम्ही दो।
नमन करो स्वीकार हमारा, चमन तुम्हारा मैं तो हारा।
निज चरणों में मुझे जगह दो, चाह यही मैं बनूं दुलारा।

## 37

कुछ पल का है मेल यहाँ पर, मिलकर यहाँ विछुड़ जाना है।
किस किस से तू वैर करेगा, जाता तन सब बह जाना है।
दिल से अपने वैर हटा लो, हरि हरि जप लो प्यार बढ़ा लो।
स्वप्निल दुनिया क्या तू पकड़े, हरि को अपने नयन बसा लो।

सारा जग अनजानी गलियाँ, पकड़ो मन तुम हरि की बैंया।
डर न लगेगा इस मेले में, पार लगावे तेरी नैया।
हरि हरि जप मन ज्ञान जगावे, टूटे भ्रम मन चैना आवे।
आये कहाँ से जायें कहाँ, धन्य हुए जो हरि को गावे।

बहता जा बन लहर यहाँ पर, सागर नाचे तुझे नचावे।
छोड़ो मैं सब हरि की लीला, अश्रु बहें हरि चरण चढ़ावे।
हरि हरि गा मन कटती रैना, कौन सुनेगा हरि बिन बैना।
कृपा मिले हरि बसे नयन में, बहता जाये फिर क्या कहना।

## 38

जाने न कहाँ जायें, न जाने यहाँ कुछ हम।
नयनों में हैं आंसू, हरि कृपा करो ना दम।
बालक तेरे स्वामी, सारे जग का दानी।
प्रभु प्यार मिले तेरा, अंखियां गेरे पानी।

अनजानी हैं गलियां, हरि पकड़ो तुम बैंया।
मैं अबल शक्तिदाता, चाहूँ तेरी छैंया।
दे प्यार मुझे अपना, कट जायेगी रैना।
नित प्रीति बढ़े तुमसे, बहावें नयन झरना।

हरि साथ सदा मेरे, मन गाये यह गाना।
पल भर भी ना भूलूँ, नयनों में हरि बसना।
बन लहर बहूँ हरि मैं, तू रहे रहूँ ना मैं।
स्वीकार करो पूजा, प्रभु दास तुम्हारा मैं।



## 39

शरण में आया तुम्हारी, प्यार दे दो तुम मुरारी।
इस जगत के तुम रचैया, तेरे बिन आंसू जारी।
कण्ठ प्यासा जल पिला दो, दुख जगत के सब मिटा दो।
नयन में तुम बसो मेरे, प्यार की मदिरा पिला दो।

नाम तेरा एक सांचा, मैं भटकता भूल तुमको।
तुम बिना ना चैन आये, दिल तड़फे पाये तुमको।
जिन्दगी कैसी पहेली, नाचे कठपुतली बनकर।
सब इशारे चलें तेरे, जानूँ न जाऊँ कहाँ पर।

हरि जपे जपते रहे हम, चाहें तेरा ही सम्बल।
अज्ञान के इस तिमिर से, पार करना हम अबल।
बन कर लहर बहते रहे, तू सदा दिल में रहे।
सुरति हो जब नाथ तुझ में, मैं मिटे तू ही रहे।

## 40

हरि तुमको दिन रात रटूँ मैं, प्यारे प्यारे गीत लिखूँ मैं।
अपनी कृपा बनाये रखना, अंखियाँ रोती तुझे लिखूँ मैं।
दुख भंजक तुम दुख को हर लो, आधि व्याधि कष्टों को हर लो।
बालक तेरा मुँह ना मोड़ो, बहते आंसू मेरे लख लो।

गीतों को तुझे सुनाये हम, दिल में उठती है जो पीड़ा।
अंखियाँ मेरी रिमझिम बरसे, स्वप्निल दुनिया क्या है क्रीड़ा?
वीणा रूठी स्वर ना बजते, कैसे अपना मन बहलाऊँ।
छिपे हुए तुम देखो सब कुछ, अंखियां रोवे तुझे न पाऊँ।

फैला जाल यहाँ माया का, मन होता पल पल में मैला।
पार लगा दे मेरी नौका, प्यार मुझे दे अपना छैला।
दास तेरा शरण तुम्हारी, नाथ अबल मैं, मुझमें ना दम।
सर्जक तुम सारी दुनिया के, बसो नयन में मिट जाये गम।

## 41

कौन अच्छा है बुरा है, कौन जो निर्णय करूँ मैं?
नाचता जैसे नचाये, तुम रहो दिल में जपूँ मैं।
तेरी मर्जी से आये, जाये ले तेरी मर्जी।
गिरते नयनों से आंसू, प्यार दे दो सुनो अर्जी।

तुम जगत के हो रचियता, नाचता ब्रह्माण्ड सारा।
खेल कुछ पल का यहाँ है, कौन जीता कौन हारा।
प्यार चाहें हरि तुम्हारा, चाहते शुभ ही कराये।
मैं अबल बस कुछ नहीं है, दर्द इतना अश्रु आये।

द्वार पर बैठे तुम्हारे, ताप से तू ही बचाये।
कैसे मैं तुझे रिझाऊँ, आंसू नयनों में आये।
ध्यान तेरा ही सदा हो, मैं नहीं तू ही सदा हो।
सब जग के भूलूँ मैं गम, चाहूँ न मुझसे खफा हो।

## 42

तारक मारक सब कुछ तू ही, याद तुझे कर अंखियां रोई।
पार लगा दे मेरी नौका, मैं हूँ अबल कहाँ तू सोई।
निशदिन अंखियां नीर बहाई, क्यों छिपे तुम कृष्ण कन्हाई।
बालक हूँ मैं नाथ तुम्हारा, मुझको राखो तुम शरणाई।

जीवन तेरा पालक मेरे, झर झर गिरते आंसू मेरे।
कहाँ छिप गये छोड़ मुझे तुम, निशदिन तड़फू सांझ सबेरे।
इस जीवन की आशा तुम ही, बाट निहारे अंखियां तेरी।
बन्शी की धुन मुझे सुना दे, जनम जनम से तेरी चेरी।

हरि हरि जपे तुझे ही खोजें, बहे नीर तुमको ना भूलें।
मेरे नयनों में बस जाओ, प्यार बढ़े हिय कमल फिर खिले।
नयन नीर थाली है खाली, फिर भी तुझे मनाऊँ माली।
मेरे सर्जक भूल न जाना, तुझ बिन कृपा लगे ना लाली।



## 43

बहता जा मन है ना मंजिल, सारी दुनिया करती झिलमिल।
हरि का मन पकड़ सहारा तू, ना दन्श सतायेंगे हरपल।
हरि जप बह लहर बना तू मन, दरिया ही है तेरा साहिल।
मर्जी उसकी नाचे जिवड़ा, उसके सम्मुख हम सभी अबल।

हरि हरि जप सुरति करो हरि से, सब ओर हरी ही है छाया।
ना लहर यहाँ कुछ पल नाचे, सागर सब ओर यहाँ छाया।
हरि हरि जप हरी बसा दिल में, हरि का सब ऋषि मुनि ध्यान करे।
अन्तस जब ज्योति जले हरि की, मैं मिटे लगे हरि खेल करे।

हरि हरि जप सब उसकी माया, आया कुछ पल तू खेल करे।
जायेगा ले तुझको हरि जब, ना पूछे चाहे नयन झरे।
हरि हरि जप मन जपता ही जा, बह जान उसी की यहाँ रजा।
हरि की मन हो जा शरणाई, मैं पकड़ पाता काहे सजा।

## 44

तुम उठा कर आंख देखो, दिल तुझे दिखला रहे।
नयन में आंसू हमारे, तुम बिना क्यों हम रहे।
दर्द तुमने दे दिया है, अब सहा जाता नहीं।
प्यार से तुम देख लो हरि, तुम बिना कुछ भी नहीं।

हरि जपते तेरी लीला, नाचता संसार है।
ऋषि मुनि करते हैं पूजा, तुम बिना ना सार है।
न किनारा कोई भी है, झिलमिलाता जगत है।
जो पकड़े तेरा दामन, छूटते भय साथ है।

डर लगे न काली रैना, तू यदि दिल में बसे।
हरि कृपा करना सदा तुम, चाह नयनों में बसे।
मेरी पूजा यह आंसू, और कुछ भी है नहीं।
तुम सदा ही प्यार देना, ले चलो मुझको कहीं।

## 45

कुछ पल हँसें घूमे यहाँ, फिर देखते कैसा जहाँ?
जिनको समझे अपना सब, मिटता निशा ना कुछ वहाँ।
हरि बिना ना चैन आये, नीर यह अंखियां बहाये।
स्वप्निल यह दुनिया सारी, मन हरी को क्यों भुलाये।

जपो हरि दुनिया उसी की, तू बन कठपुतली उसकी।
अश्रु बहते याद कर हरि, ज्ञान दे चलती उसी की।
हरि जपो जपते रहो मन, फिर ना सतायेगी चुभन।
मार्ग के कांटे सिमटते, मन तू बसा ले हरि नयन।

सत्य वह कुछ पल यहाँ है, जाने न जाना कहाँ है?
पकड़ो मन अंगुली हरि की, ले चले वह ही ठिकां है।
हरि मर्जी आयें जायें, मैं पकड़ नयना बहायें।
सौंप निज को उसके हाथों, ज्ञान दे जिय सुख को पायें।

## 46

मन हुआ है बाबरा, छिप गया तू सांवरा।
व्याकुल मन है मेरा, अबल हूँ चल चल गिरा।
लाज को रखना हरी, तुम जगत के रचैया।
घूमूं बालक तेरा, पकड़ो मेरी बैंया।

प्यार हरि तुम से बढ़े, नयन में तू समाये।
मृगतृष्णा में फंसकर, नीर अंखियाँ बहाये।
बहते मेरे आंसू, मुँह नहीं प्रभु मोड़ना।
चाह सुनूँ बन्शी स्वर, देख दिल का तड़फना।

दर्द जग में बिखेरा, इन्तजा हो सुबेरा।
नयन से बहें आंसू, दूर कर दो अंधेरा।
कृपा को चाहता हूँ, भटकता अज्ञान में।
दास मैं माफ करना, नीर बहते आंख में।



## 47

बस यहाँ कुछ भी नहीं है, आ गये जायें कहीं पर।
नाचें कठपुतली बन कर, जान पाते हैं नहीं पर।
हरि बसा ले मन नयन में, भूल कर जग की शिकायत।
जगत यह चलता रहेगा, मत उलझ रख हरी चाहत।

जप हरि सबका वह मालिक, बस क्या जो होता गाफिल।
मैं चढ़ा दे हरि चरण में, जाये ले तुझको साहिल।
हरि जपो जपते रहो मन, छूट जाये ना सुरतिया।
दर्द बहता है जगत में, देखो रोती हैं अंखियां।

हरि जपो जप शान्ति देगा, दीप इस तम में जलेगा।
कौन अपना है पराया, जप हरी ही ज्ञान देगा।
बहता जा सागर हरि का, ढूंढती है लहर सागर।
हरि सुमर सब कुछ उसी का, मिट के देखे संग सागर।

## 48

बस जाओ मेरे नयनों में, दीप जले इस अंधियारे में।
मेर देवता तुम ना रूठो, गया हार आंसू नयनों में।
चाह प्यार की दानी दे दे, बन्शी सुन नाचे यह जियरा।
प्रेम दिवानी मीरा नाची, नाचूँ भूल जगत गम विसरा।

प्रीति बढ़े नित वर दे ऐसा, सूख न जायें मेरी अंखियां।
बरसे ऐसे जैसे सावन, जब तक तुम पाओ ना सैयां।
हरि हरि सांस रटें यह मेरी, कितनी हरी लगाना देरी।
बहता रहे नयन से पानी, ना ठुकराना तेरी चेरी।

जनम जनम से साथ तुम्हारा, तुमको भूल हुआ बेगाना।
तुम बिन कृपा मिले ना रस्ता, तुझे पुकारूँ सुन ले बयना।
अन्तस मेरे ज्ञान जगा दो, तम बिखरा प्रभु उसे हटा दो।
करूँ चरण तेरे की पूजा, ना जानूँ कुछ नाथ शरण दो।

## 49

गीत गा ले मन हरी के , उसी की रजा में बह ले।
समझ ले उसके इशारे, तज मैं को हरि को जप ले।
आये जब  यहाँ न पूछा, जायेंगे न पूछ कोई।
आंसू की बह रही गंगा, हरि चाहे वह ही होई।

टूटते जब बिखरते हैं, ले रहे सुपने अनेको।
नयन में आंसू मचलते, न रोक पाते हम स्वयं को।
बहो मन नदिया उसी की, तुम हो लहर यह जान लो।
आर्ये है मर्जी उसकी, जायेगे हरी शरण लो।

मन करो सुमरण हरि का, कर रहा संसार झिलमिल।
जो मिले है अब यहाँ पर, जायेगे यही विछुड़ कल।
क्या यहाँ अपनी खुशी है, कब जगा कर वह सुलाये।
तू लहर जप ले जलध को, जप मिटे संग जलध पाये।

## 50

पार हरि नदिया करा दो, मन नहीं लगता हमारा।
नयन से आंसू निकलते, क्यों हुआ यह जगत खारा?
तेरी बंशी धुन सुने बिन, क्या जगत में फिर प्रयोजन।
तप्त दिल ना मेघ वरषे, मैं कहूँ किसे तेरे बिन।

ढलती है अब तो संध्या, ना जाना जग में भटका।
प्यार अपना हरि मुझे दो, नीर नयन से है टपका।
तुम सर्जक मेरे पालक, तुझे रो दुखड़ा सुनाऊँ।
जो रच दी तूने लीला, मैं अबल ना समझ पाऊँ।

ज्ञान इस दिल में जगा दो, प्यार का झरना  बहा दो।
गीत तेरे ही उठें हरि, कर्म शुभ हों वर हमें दो।
प्रभु हम हैं तेरे बालक, देखो रोवे यह जिवड़ा।
नयन में प्रभु बसो मेरे, सब मिटे फिर जगत पीड़ा।



## 51

गा गीत मन, उड़ चल गगन, कहाँ पिव छिपा देखो मन।
जाऊँ कहाँ हारे नयन, नचा रहा तू भी तो मन।
जग में चुभन मिटती न जब, सांस यह गाती गीत है।
हरि एक सांचा मीत है, आंखें बहाती नीर हैं।

सुन लो हरि विनती मेरी, तुझ दर्श के प्यासे नयन।
तू प्यार दे दे मैं अबल, मछली सा तड़फूं जल बिना।
ऊसर जमी उपजे सुमन, हरि प्यार में सब कुछ छिपा।
दीपक जला, कर अर्चना, मन क्यों जगत से है चिपा।

सर्जक वही पालक वही, तू कौन नाचे सब वही।
वह करेगा पार नौका, हरि ध्यान धर खेवट वही।
नयन में हरि मूरति बसे, ना डर लगे उसको जपे।
सागर लहर है जानती, जाना कहाँ उसको जपे।

## 52

नीर बहायें मेरी अंखियां, खोजूँ तुझे कहाँ मैं सैंया।
ना आये तुम हार गई मैं, ना रूठो पड़ती मैं पैंया।
बाट निहारूँ सदा तुम्हारी, याद करूँ सूरत वह प्यारी।
मिट जाते सब दन्श जगत के, तुमको भजते सब संसारी।

जीवन तेरा प्यार मुझे दे, तुम बिन कहूँ किसे मैं बोलो?
अन्तर्यामी घट की जानो, ताप  हरो तुम रस को घोलो।
खिलें फूल महके जब बगिया, नभ से गिरती हैं जब झड़ियाँ।
गीत सुनाये पवन प्यार के, करूँ याद बरसे यह अंखियां।

मीरा नाची मैं भी नाचूं, कोई ऐसा राग सुना दे।
मिट जाऊँ गा तेरे नगमें, बंशी स्वर को मुझे सुना दे।
प्यारा तू प्यारी है यादें, याद तुझे कर अंखियां तरसे।
नीर रूके न बहता जाऊँ, मिलो न जब तक झर झर बरसे।

## 53

कह दो मुझसे तुम हो मेरे, मैं रटूं तुझे ना मुंह फेरे।
अज्ञानी बालक मैं तेरा, प्यासी अंखियां आंसू गेरे।
इन नयनों में छवि हो तेरी, चाहूँ मैं सदा रहूँ तेरी।
पल भर भी नहीं विछोवा हो, हरि बना मुझे अपनी चेरी।

अपनी राखो हरि मुझे शरण, हरि हरि कहते बीते जीवन।
तुझमें सोऊँ जागूँ तुझमें, संगीत सुनाए यही पवन।
कण कण में हरि तुम बसे हुए, प्यासे क्यों फिर भी तड़फ रहे।
जल बिन जैसे मछली तड़फे, तुम बिन चाहूँ ना प्राण रहे।

ऋषि मुनि ज्ञानी तुमको भजते, सब कृपा तेरी हरपल चहते।
चाहूँ मैं प्यार अबल हूँ प्रभु, देखो हरि नीर यहाँ बहते।
सागर में बहूँ लहर बन कर, नयनों में नाचे छवि तेरी।
दे ज्ञान मुझे तू हरि इतना, तू सदा साथ ना है दूरी।

## 54

पाने को जब कुछ नहीं यहाँ, क्या पाने दौड़ लगाये मन।
बैचेन जगत सारा डोले, चिन्ता को मिटा न पाये मन।
आंखों में आंसू भूख प्यास, सुख दुख की छाया पुण्य पाप।
सुपने आंखों में है हजार, हरि भजो मिटे फिर सकल ताप।

हरि हाथ डोर हम कठपुतली, वह नचा रहा सबको छलिया।
मृगतृष्णा में भटकावे मन, बिन जपे न मिलती है छैंया।
हरि जप हरि जप है सार यही, तपते दिल को दे शान्ति यही।
वह आदि सत्य है अन्त सत्य, दे वर्तमान में राह यही।

हरि जपो सदा जपते रहना, बन लहर यहाँ बहते रहना।
उसकी मर्जी जैसे राखे, दे ज्ञान वही हरि में बहना।
हरि गा हरि गा हरि चरण चढ़ा, नयनों से नीर बहें तेरे।
अपना क्या सब माया उसकी, मैं मिटा कटें फिर सब फेरे।



## 55

आये ना तुम सावन जाये, प्यासा कौन पिलाये पानी।
नीर बहावें मेरी अंखियां, आंख उठा देखो तुम दानी।
जीवन तेरा कुछ ना मेरा, देखो हमको रोवें अंखियां।
प्यार तुम्हारा चाहूँ दे दो, बाट निहारें कब से अंखियां।

हरि हरि जपें पुकारे तुमको, इन नयनों में तुम बस जाओ।
छूटे सभी जगत की तृष्णा, हरि तुम अपना प्यार बढ़ाओं।
सुन लो हरि मैं दास तुम्हारा, तू ही है बस एक सहारा।
पार लगा दो मेरी नौका, सारे जग का खेवन हारा।

तेरी रहमत का भूखा जग, आंसू गिरते रहते टप टप।
पिला सभी को अपनी हाला, पहुँचे तेरे द्वारे सब जप।
सांस सांस हरि तुझे उचारे, शरण तुम्हारी हम तो हारे।
तुम बिन ज्ञान कहाँ से लाऊँ, ज्ञान हमें दो पहुँचे द्वारे।

## 56

गा ले मन तू गीत हरी के, उस बिन रोवें मेरी अंखियां।
कैसे पहुँचूंगा मैं चलकर, डर लागे धड़के यह जीया।
इस जीवन का प्यारा वह ही, हरि बिन नहीं सहारा कोई।
आदि सत्य वह अन्त सत्य है, वर्तमान क्यों उसको खोई।

जपता जा वह प्यारा प्रियतम, थके हुए को देता वह बल।
उस बिन पार न होवे नौका, जिया जलावे तू क्यों हरपल।
हरि हरि बोलो हरि को जी लो, जख्म लगे जो उनको सी लो।
स्वप्निल है यह सारी दुनिया, जप उसको मन अमृत पी लो।

अंखियां बरसे हरपल रिमझिम, जब तक मिले नहीं वह साजन।
पिया प्रीति का प्याला जिसने, डूबा उसमें खोजे साजन।
गा मन गा मन जाता है तन, भूल भुलैया सारी दुनिया।
जप ले चैन मिलेगा दिल को, छिपा हुआ रहने दे छलिया।

## 57

किसको सुनायें दास्तां, सुन ले यहाँ पर कौन है?
दर्द दिल में बह रहा जो, ना देखता हरि मौन है।
बहे आंसू चल रहे पर, न शिकायत जग से करते।
प्यार मिल जाये तुम्हारा, यह विनती तुमसे करते।

नाथ तेरी  हम शरण में, सारे जग का तू दानी।
थक गिरूँ हरि थाम लेना, तुम बिना मिलता न पानी।
गीत तेरे ही उठे हरि, स्वप्न सा संसार सारा।
चैन आये न तेरे बिन, चाहता तेरा सहारा।

मर्जी तेरी मैं चेरी, खुश रहूँ तुमको मनाये।
प्रीति की ना डोर टूटे, नाथ हम तुमको रिझाये।
याद कर हरि नयन रोयें, छिपो नहीं मुझसे छलिया।
नयन में हरि बसो मेरे, मैं पड़ता तेरे पैंया।

## 58

हरि दर्शन को अंखियां तरसे, मन बहलाऊँ मैं कैसे?
अगम अगोचर पार न उसका, फिर भी यह अंखियां बरसे।
प्रीति दिवानी नाची मीरा, अंखियों से मोती बरसे।
सकल सिद्धि फीकी पड़ जाती, यादों में नयना बरसे।

जप ले मन रख सदा सहारा, भूलो ना खेवनहारा।
जाती संध्या ढलता दिन है, याद करो वह है प्यारा।
हरि हरि जप ले उसकी  दुनिया, कौन यहाँ तू नाचे छलिया।
लाये ले जाये वह मालिक, सींच नीर से मन पैंया।

जप हरि हरि बह ले सागर में, साथ रहे उसका साया।
डर न लगेगा उसे भजेगा, देखेगा हरि की माया।
हरि हरि जप मन प्यार बढ़ा ले, मुरझाया जिया खिला ले।
स्वप्निल दुनिया क्या तू पकड़े, लहर बना सागर जी ले।



## 59

जो तूने चाहा वही हुआ, किससे करनी है यहाँ गिला।
जैसा विवेक दे जीते हम, चाहूँ निज हाला खूब पिला।
हरि प्यार हमें दे बहें नयन, दर्शन की प्यासी हैं अंखियां।
तुम बिन जियरा यह ना लागे, पड़ता हरि मैं तेरे पैंया।

आये हम जाये नाव कहाँ, तुमसे हरि करूँ यही विनती।
नौका को पार लगा देना, हरि कृपा मिले खिलती धरती।
मैं दास तुम्हारा अज्ञानी, दे भीख मुझे तू तो दानी।
ना होना मुझसे कभी जुदा, सुमरण हो नही रूके पानी।

हरि बाट निहारूँ सदा तेरी, जब भी आओ मर्जी तेरी।
न प्रेम डोर यह जाये टूट, जन्मों जन्मों से मैं चेरी।
हरि हरि गाये तेरे नगमें, गाते गाते लय हो जाये।
ना रूठ कभी मुझसे जाना, यह नीर बहे तुमको पाये।

## 60

खोजते हम सत्य को है, सत्य हम क्या जानते?
बह रही आंसू की गंगा, पीड़ ना पहचानते।
आये पूछा न किसी ने, जायें रोके न रूके।
फिर रहे दिल को लगाते, कौन जो हम कह सकें?

मन जपो हरि सत्य वह ही, कुछ पलों का खेल है।
बह रही नौका हमारी, हरि बिना ना चैन है।
उठा रहे सुपने अनेको, बैचेन दिल भागता।
नयन रोये हरि कृपा बिन, क्यों नहीं हरी भजता।

हरि जपो मन वह सहारा, जाती ले हरि धारा।
छोड़ मैं तू कौन जग में, मिट रहा खेल सारा।
जपो हरि हरि जप हरि हरि, दन्श सब भूल जाये।
बस न कुछ हरि ही मालिक, सब जगत वह चलाये।

## 61

तुम बिन ज्ञान कहाँ से लाऊँ, दे दो ज्ञान तुझी से पाऊँ।
जग में भटकूँ उलझ गिरूँ मैं, कृपा होय तो ही तर पाऊँ।
नयना मेरे झरते झर झर, मैं हूँ अबल चाहता सम्बल।
बढ़ा हाथ हरि मुझे थाम लो, पहुँचू तुम तक ना इतना बल।

हरि हरि जपूँ करूँ मैं पूजा, दास तुम्हारा क्यों तू रूठा।
कितने बीते जनम न आया, तू ही संभाले पर न दीठा।
हरि हरि जपूँ खोल दे खिड़की, मन्दिर तेरा अंखियां बहती।
खड़ा द्वार पर हाथ जोड़कर कर, मुझे रूला ना ले चल किस्ती।

इस जीवन को देने वाले, तुम बिन कहूँ किसे मतबाले।
ठगनी माया नाच नचावे, नयन झर रहे इनको लख ले।
पाप पुण्य दुख सुख का मेला, नाच नचावे हमको छैला।
नाच रहे ना बस में है कुछ, मिले ज्ञान ना दिल हो मैला।

## 62

मन पीछे पीछे क्यों जाये, जग से लिपटे ठोकर खाये।
मन सजा नयन में हरि मूरति, बसता दिल में दुख मिट जाये।
हरि जप ले मन तू सत्य वही, ना व्यथा मिटेगी और कहीं।
मर्जी उसी की आये यहाँ, ले जाये चाहे जहाँ कहीं।

हरि हरि जप और नहीं है सुख, मेला दो दिन का यह दुनिया।
मन तृष्णाओं में घूम रहा, हरि बिन रोती रहती अंखियां।
हरि हरि जप सुख का सागर वह, मन भूल उसे दुख पाता क्यों?
जपता जा पार करे नौका, देता पतवार न उसको क्यों?

हरि हरि जप ज्ञान वही देगा, कांटे तेरे सब हर लेगा।
बहते जो नीर नयन से है, वह फूल बना महका देगा।
मैं हटा हरी के चरण पकड़, मन तू क्या सत्य सदा वह ही।
जब मिटे लहर सागर ही हैं, मन सत्य जान सब जगह वही।



## 63

जीवन जाता तू ना आता, कहाँ छिपे तुम मेरे दाता।
नयनों में मेरे आंसू हैं, खोजूँ तुमको पता न पाता।
लाज राखना इस मेले में, इस जीवन के तुम हो स्वामी।
बहता इन आंखों से पानी, तुझे मनाऊँ अन्तर्यामी।

अज्ञानी कुछ भी ना जानूं, रो कर अपने नीर दिखाऊँ।
बालक तेरा प्यार चाहता, नगमें गा गा तुझे सुनाऊँ।
सांसें तुझे उचार रही है, इन प्राणों की प्यास तुही है।
पार लगा दे मेरी नौका, मेरा खेवनहार तुही है।

कण कण में तू बसा हुआ है, फिर भी मुझसे छिपा हुआ है।
अंखियां नीर बहाती रहती, बता मुझे क्यों खफा हुआ है?
अंखियां झरें बजा दे बंशी, कटे रैन जलता यह जीया।
बालक तेरे ज्ञान हमें दो, मिल जाये हरि तेरी छैया।

## 64

बिखरा रूदन कितना यहाँ, खिलखिलाती पर हंसी भी।
कैसी माया तुम्हारी, कोई जाने न कभी भी।
दुख भरी यह रात काली, चैन मिले तुझसे माली।
नयन से जो नीर गिरते, फूल बने लगती लाली।

बह रही नौका हमारी, जायें कहाँ ना पता है।
एक हरि तेरा सहारा, चल रहा तुझसे जहाँ है।
कृपा हो जिस पर तुम्हारी, सब बादल दुख के फटते।
नयन से जो बहें आंसू, फूल बन कर वह महकते।

चाहते तेरी कृपा हरि, जगत की अनजान गलियाँ।
हरि करो पथ में उजाला, सदा मिले तेरी छैंया।
हरि जपें सांसें उचारें, तुम बसो नयन में मेरे।
प्यार चाहे हरि तुम्हारा, दूर हो तम हमें घेरे।

## 65

पी रूठ गया तो जाये कहाँ, जीवन यह क्यों सांसे लेता?
तुम बिन लागे न मेरा जिया, इन आंखों से पानी बहता।
देकर कठोर ऐसा जीवन, बेदर्दी छलिया छिपा कहाँ?
सुपनों की होली जली यहाँ, ना छोड़ मुझे पी रटूँ यहाँ।

क्यों जीते आंसू को पीते, दिल लगता मेरा नहीं यहाँ।
दुख देख देख जग के मालिक, नयना बरसें दे प्यार यहाँ।
बज जाये हरि बन्शी तेरी, तब शान्ति मिले तपते दिल को।
यह प्राण पुकारें सदा तुझे, ना भूल शरण रख ले हमको।

ऐसा रूखा ना जीवन दे, तेरे नगमों को गायेगे।
हरि प्रीति बढ़े विनती मेरी, सुमरण कर लय हो जायेगे।
नयनों से आंसू बरस रहे, इस दिल से मेरे दर्द बहे।
अज्ञानी बालक पर तेरे, दे प्यार मुझे बस यही चहे।

## 66

पाना क्या और यहाँ खोना, तू दर्द बांट ले जग सुपना।
जो रोती आंखे प्यार बांट, तू देख छिपा उसमें सजना।
बहती जाती जीवन धारा, बह और किनारा क्या खोजे।
हरि हुआ समर्पित बहता जा, कर याद उसे तन मन भीजे।

हरि हरि जप बन तू यहाँ लहर, क्या लहर यहाँ सागर नाचे।
यह लहर जहाँ हरि छिपा वहाँ, क्या लहर झूठ हरि ही सांचे।
झेले सुख दुख सारी पीड़ा, सागर ले लहर करे क्रीड़ा।
वह भ्रमित हुई सी भाग रही, बिन ज्ञान मिटे ना यह पीड़ा।

हरि हरि बोलो हरि को जप लो, ना और यहाँ कोई मंजिल।
नयनों से नीर बहें तेरे, तू देख उसी की है हलचल।
बस अपने कुछ ना हरि लीला, स्वीकार करो उसकी क्रीड़ा।
सब ज्ञान ध्यान का मालिक वह, जप शान्ति मिले मिटती पीड़ा।



## 67

हरि करो कृपा दो ज्ञान हमें, बालक तेरे नादान यहाँ।
जीवन की इस पगडण्डी पर, दे प्यार खिले यह सकल जहाँ।
तुम सृष्टि रचियता जगपालक, करूणा सागर कहलाते हो।
अरमानों की जलती होली, क्यों छिपे हुए ना आते हो।

कैसे स्वर यहाँ उठाये हम, तू रीझे तुझे मनाये हम।
अज्ञानी अबल नाथ हैं हम, दे ज्ञान तभी कुछ पाये हम।
जीवन तेरा हरि हरि बोले, इस अंधियारे में ना सोवे।
डगमग करती मेरी नौका, तू हमें देख नयना रोवे।

कण कण में तेरा वास यहाँ, यह पवन गीत तेरे गाये।
तुझ दर्शन की प्यासी अंखियां, खोजे पर नजर नहीं आये।
साथी अंधियारी राहों में, हरि हरि करते तेरी पूजा।
तू पार लगा मेरी नौका, न तुझ बिन और कोई दूजा।

## 68

हरि की मर्जी से आयें हम, जप उसको मन हरि को जी ले।
अपना क्या देगा ज्ञान वहीं, हरि याद करो हरि को जप ले।
अच्छा हरि यह दुनिया अच्छी, क्यों फिर भी यह अंखियां बरसी।
ना जाने कुछ हम कठपुतली, हरि यादें ले अंखियां तरसी।

कोई है राजा रंक यहाँ, सुपने टूटें चल रहा जहाँ।
हरि चरणों में पड़ यह देखो, सब उसकी मर्जी चले जहाँ।
कुछ खेल यहाँ मिट जायेंगे, मन गा हरि हरि जीवन सुपना।
उसकी सब मर्जी समझ यहाँ, नदिया उसकी कुछ ना अपना।

जैसा राखे रहना होगा, जो ज्ञान मिले जीना होगा।
नयनों से नीर बहें कितने, हरि बिन मन शान्त नहीं होगा।
आये कहाँ से जायें कहाँ, जाना किसने ऋषि मुनि हारे।
जो हुआ समर्पित हरि चरणों, ले जाती धारा वह तारे।

## 69

अपनी अपनी यहाँ कहानी, बहता इन नयनों से पानी।
घूम रहे अनजानी दुनिया, दम यह भरते हम है ज्ञानी।
मन हरि जप बस ज्ञान यही है, नियति खिलौने सत्य यही है।
खेले कूदें फिर खो जाये, क्या बस में क्या जान सही है?

हरि हरि जप बरसेंगे आंसू, पड़ हरि चरण नही कुछ भी तू।
छोड़ वासना तुझे रूलाये, स्वप्निल सब मन कौन यहाँ तू।
धूप छांव सुख दुख का खेला, हरि बिन जपे न आये चैना।
जग के दन्श सताये जब जब, करें याद हरि आये रोना।

हरि हरि जप मन चैन मिलेगा, अन्तस तेरे ज्ञान जगेगा।
तुझे ले चले बांह पकड़ कर, हरि जप तुझको लिये चलेगा।
हरि हरि गा मन हरि को भज ले, दुख आये सह मन तप कर ले।
पड़ जा मन उसके चरणों में, अपना क्या सब उसका भज ले।

## 70

दो बूंद गिरे हरि चरण चढ़े, चाहत हरि मुझसे प्रेम करे।
ना जान सके बहते नयना, बस जाओ नयनों में मेरे।
अन्तर्यामी घट के स्वामी, तुम बिन रोती मेरी अंखियां।
न पता तुम्हारा मैं जानूँ, कैसे समझाऊँ यह जीया।

हरि हरि गाऊँ चैना पाऊँ, सब भूल तुझी में खो जाऊँ।
कर माफ खता यदि है कोई, अज्ञानी समझ नहीं पाऊँ।
मैं जाऊँ कहाँ रोवे नयन, जीवन की अब ढलती संध्या।
पूजा मेरी स्वीकार करो, कठपुतली मैं पड़ता पैंया।

बालक तेरा रखबाला तू, मुझमें ना बल सुखदाता तू।
दे प्यार जिया मेरा हरषे, अपनी छैया में रख ले तू।
तेरे गीतों में हरि बहकर, यह सफर यहाँ होगा पूरा।
दो बूंद गिरें स्वीकार करो, हरि बहती तेरी ही धारा।



## 71

उड़ता मन जाये कहाँ ठिका, बहते नयना हरि चरण चढ़ा।
तू जहाँ बसेरा वह तेरा, बन लहर हरी से प्यार बढ़ा।
बहता जा यह हरि मर्जी, जप उसे याद कर संग वह ही।
उसकी ही चले जायें कहाँ, दुख मिटते जप सब कुछ वह ही।

हरि हरि गा मन जग में क्या धन, अंखियां बरसे जैसे सावन।
कोई ना आये हाथ यहाँ, मिटता जाता है यह भी तन।
हरि हरि जप हरी को हिय बसा, पथ दुर्गम पी ले यही नशा।
कट जायेंगी काली राते, दे ज्ञान वही दे तुझे दिशा।

हरि हरि जप चलती बस उसकी, नाचें हम तो है कठपुतली।
जग में आये ले जाये वह, उसके हाथों में है सुतली।
ज्ञानी कोई है मन्द बुद्धि जग में कितनी योनी घूमे।
जीवनदाता मारक वह ही, सब छोड़ धन्य पग हरि चूमें।

## 72

जिन्दगी क्या गीत गाती, देख नयना खोलकर।
कर जतन हो नहीं विह्वल, संग हरि को याद कर।
विखरे कांटे हैं जग में, फूल भी खिलते यहाँ।
जपो हरि को प्यार कर लो, खिलेगा सारा जहाँ।

हरि जपो वह ही सहारा, जपता रह क्यों हारा।
सबका सर्जक वह पालक, उस बिन न है गुजारा।
फटते सब दुख के बादल, हरि कृपा हो मन जहाँ।
उस बिन रोवें यह अंखियां, देख कितना बल यहाँ।

हरि जपो सांचा वही धन, प्यार से जप उसे मन।
उठ रहे तूफान जग में, ना मिटे उस बिन चुभन।
आदि वह ही अन्त वह ही, कौन मैं सत्य वह ही।
ले चलेगा ना रूकेंगे, पड़ चरण सत्य वह ही।

## 73

तन नहीं मैं मन नहीं हूँ, कौन हूँ  हरि तम को हर लो?
ज्ञान की बाती जला दो, प्रीति में हरि मुझको रंग लो।
उठ रही लहरें अनेकों, स्वप्न सी यह सारी दुनिया।
टूटते अरमान दिल के, नीर बहते रोवें अंखियां।

ले चलो उस पार मुझको, जलती जहाँ तेरी बाती।
मन नहीं लगता हमारा, तुम बिना अंखियां यह रोती।
यह बरसते नयना मेरे, प्यार दो हरि आये चैना।
तू बजा दे बन्शी अपनी, चाहता मैं तुझमे बहना।

प्यार दे झरें है अंखियां, जग में तुम बिन रस न रसिया।
मीरा नाची प्यार पा कर, मुझे रंग ले तू भी छलिया।
प्यार पायें हम मनाये, जा रहा ले मुझको झोंका।
चरण में पड़ते तुम्हारे, पार कर दे मेरी नौका।

## 74

अपनी अपनी लिये वासना, घूम रहे इस जंगल में सब।
हरि बिन चैन न आये मन में, उलझ गिरें देखें यह क्या सब।
क्षण भंगुर करता नादानी, सभी मिट रही यहाँ कहानी।
तू जो सोंचे सत्य वही क्या, पल पल नयन बहाये पानी।

जैसा होना हो किस्मत में, मति हो जाती वैसी ही है।
हरि ही तेरा भाग्य विधाता, क्यों उसे भूल कर रोवे है।
हरि जप हरि जप ज्ञान जगावे, व्यर्थ नहीं जग में भटकावे।
सोच सोच हारा जो जग में, छैया हरि की फिर मिल जावे।

प्रीति बढ़ा अज्ञान हरे वह, मेला यह दो दिन का सारा।
दे पतवार उसे क्यों रोवे, पार करे वह खेवन हारा।
हरि जप हरि जप शान्ति मिलेगी, कौन जपे लख दृष्टि मिलेगी।
तेरी बगिया का रखबाला, याद उसे कर फिर महकेगी।



## 75

याद करते हम तुझे हरि, ले चलो नौका हमारी।
तुम बिना ना पार होवे, डरता अंखियां हैं भारी।
प्यार दो बालक तुम्हारे, तुम बिना जायें कहाँ हम?
नीर बहते हैं नयन से, रूठो न हरि हैं अबल हम।

ज्ञान दो अनजान गलियां, बहती हैं मेरी अंखियां।
मृगतृष्णा में फंसे हम, पाते दुख रोवे जीया।
तुम अगोचर दीखते ना, तुमसे है संसार सारा।
कौन हूँ मैं खोजता यह, कर कृपा हरि दे सहारा।

काट सकता मैं न बन्धन, मन रोता करता क्रन्दन।
बहते नयनों से आंसू, कैसे पाऊँ सुखनन्दन?
यह जगत तेरी कहानी, कुछ पता न बहता पानी।
लाज मेरी राखना हरि, तुमसे कहता सुन दानी।

हरि कृपा रखना सदा तुम, बालक तुम्हारे जानना।
अज्ञानी पर्दा हटाना, जब भी गिरे, संभालना।
तुमसे यह ब्रह्माण्ड नाचे, देखो अंखियां यह रोवे।
प्रीति हरि तुमसे बढ़े नित, दे कृपा हरि तू न सोवे।

## 76

गाये गीत न मैं गा पाया, हरि दे दो तुम अपना साया।
अज्ञानी हूँ बालक तेरा, इस जंगल में मैं भरमाया।
ऋषि मुनि ध्यान लगा कर हारे, धन्य वही जो पड़ता द्वारे।
अगम अगोचर पार न तेरा, कृपा करो बस तू ही तारे।

मेरी सांसों में बस जाओ, प्राण पुकारें तुमको आओ।
रोम रोम ले नाम तुम्हारा, हरि तुम मुझसे प्रीति बढ़ाओ।
जग में भटका प्यास मिटी ना, तृष्णाओं ने है उलझाया।
अन्धकार से ढकी चदरिया, दीप जला दो शरणा आया।

बन्शी धुन हरि मुझे सुनाओ, ताप हरो हरि कष्ट मिटाओ।
खोज रहा कितने जन्मों से, अब सुन लो ना नयन चुराओ।
कण्ठ नहीं जो रिझा सकूँ मैं, टूटा साज लिये शर्माऊँ।
बहते इन नयनों से आंसू, लाज राखना तुझे मनाऊँ।

## 77

यहाँ मिलकर बिछुड़ जाते, चले यह एक सुपना है।
यहाँ हम नीर को देखें, यह दुनिया इक धोखा है।
जगत की प्रीति क्या पागल, बहा कितना नयन से जल।
न आते जा चुके है जो, पलटती रंग यह हरपल।

जपो हरि हरि सहारा वह, दुखों में साथ दे तेरा।
घटायें जब घिरें काली, पुकारे तू कहे मेरा।
नयन में हरि बसा पगले, कटेगा यह सफर सारा।
न उस बिन चैन मन पावें, नयन से जल बहे खारा।

हरि हरि बोलो हरि जप लो, बहे जो जल इसे चख लो।
विषम दुनिया यहाँ कितनी, देखो हरी नहीं भूलो।
तू बन्जारा हरि जप ले, आये अब तो जायेगा।
यहाँ मिटती लकीरें सब, मिटा मैं हरी पायेगा।

## 78

हरि हरि बोलो हरि को जी लो, बहता जीवन इसको पी लो।
प्यास मिटेगी पीड़ भगेगी, इस सुपने को सुन्दर कर लो।
पीड़ित सब जग मन तू हरि जप, सबका खेवन हार वही है।
जिसने जपा चुभन मिट जाती, कण कण में फिर छिपा वही है।

साथ हर समय वह है तेरे, फिर भी उससे अंखिया फेरे।
फंसा वासना के पहिये में, बादल दुख के फिर फिर घेरे।
हरि हरि जपो साथ वह तेरे, किसके लिये नीर तू गेरे।
साथ उसी का अन्तिम पल तक, प्यास प्राण की मुँह ना फेरे।

आस क्या करे जग से तू मन, लिये वासना घूम रहे सब ।
मिल कर यहाँ विछुड़ते सारे, कोई हाथ न आये जप रब।
हरि हरि गा मन कटती रैना, दुख में नहीं बहेंगे नयना।
हरि पर है विश्वास अटल जब, बनते शूल फूल यह कहना।



## 79

हरि हरि जप मन सत्य कहूँ सुन, अन्तस तेरे ज्ञान जगेगा।
जो रोते हैं तेरे नयना, दिल का उससे सुमन खिलेगा।
धूप छांव सुख दुख का खेला, जिवड़ा इसमें फिरे अकेला।
हाथ बढ़ाये हाथ न आये, बहे लहर कैसा यह मेला।

ऋषि मुनि हारे ध्यान लगा कर, कहाँ छिपा वह नटखट छलिया।
जप ले मन तू मांग उसी से, दे दे अपनी तुझको छैया।
जीत हार का चक्र चल रहा, देखे कुछ पल का है सुपना।
बनी पहेली रोते हैं हम, हरि बिन कभी न आये चैना।

झुक जा मन तू हरि चरणों में, और सहारा ना कोई है।
मान ना मान मर्जी तेरी, हरि बिन आंख सदा रोई है।
प्राण पुकारे आ जा रसिया, तुम बिन सूना रोये अंखियां।
दास हरी का जनम जनम का, मांग ले मन हरी की छैया।

## 80

क्या खता हुई जो भूल गये, नजरें न उठाई बदल गये।
नादान हूँ मैं सोचा नहीं, पाते दुख निशदिन नये नये।
प्यासा हूँ प्यार मिले मुझको, अज्ञानी ज्ञान नहीं मुझको।
तेरी बगिया में खिले यहाँ, कहाँ जाये कहो तुम हमको।

मेरी आंखों में आंसू है, हरि भीख प्यार की मैं मांगू।
इस दुनिया के तुम मालिक हो, दे ज्ञान मुझे जो मैं जांगू।
जपता ही रहूँ हरी तुमको, नयन से बहे मेरे धारा।
जब तक न मिलो हरि तुम मुझको, सूखे ना बहे सदा धारा।

हरि लाज राखना ज्ञानी ना, मैं बना समय का मोहरा हूँ।
चरणों में जगह मुझे दे दे, हरि कृपा मिले मैं प्यासा हूँ।
बस जाओ नयनों में मेरे, हरि हरि तेरी पावन गंगा।
मैं सदा करूँ सुमरण तेरा, जो भी नहाये मन हो चंगा।

## 81

दिल रोये यह बहते नयना, मन मेरे तू सुन ले बयना।
मृगमरीचिका में उलझावे, तू दूर न कर मेरे सजना।
प्रीति बढ़ा वह प्रियतम प्यारा, स्वप्निल है यह सारी दुनिया।
कितना भटक न आये चैना, मेरी रोती उस बिन अंखियां।

जग में भटकूँ सिर को पटकूं, सारी हंसती है यह दुनिया।
डोर बांध दे उस छलिये से, फिर मिल जाये उसकी छैया।
करूणा कर वह कृपा करेगा, छोड़ मुझे दे अब तू छलना।
खोजूँ उसकी राह बता दे, मेरे भर भर आये नयना।

बस जाये हरि इन नयनों में, हरि हरि प्राण पुकारें मेरे।
मुझको ऐसा जाम पिला दे, सांस सांस में उसे उचारे।
कल क्या होगा हरि ही जाने, बहते आंसू उसको जप ले।
दो दिन यहाँ प्रीति में रंग ले, हरि हरि गाये हरि को जी ले।

## 82

तरस गये पर प्यार न पाया, मेरा जीवन यह मुरझाया।
बालम रूठ गया  है मुझसे, क्यों रिझा नहीं उसको पाया।
ऐसी तोड़ी प्रीति बता क्यों, बहें नीर पर वह ना देखे।
अंखियां बरसे वह ना रीझे, विवश बने हम नभ को देखे।

जनम जनम का साथ हमारा, कह कह कर मन मेरा हारा।
निष्ठुर बन कर तुम क्या लोगे, दो दिन का जीवन है सारा।
तुम बिन सूना जग यह लगता, तुझे खोजती मेरी अंखियां।
नही सहारा तुम बिन कोई, निष्ठुर ना बन प्यारे छलिया।

बालक तेरे माफ हमें कर, जाने ना हम खता हमारी।
जग में आये घूम रहे हैं, कुछ ना जाने आंखे भारी।
प्यार हमें दो ज्ञान हमें दो, सर्जक तुम हम तो अज्ञानी।
पार लगा दो मेरी नौका, इन आंखो से बहता पानी।



## 83

पल पल मांगू तुझसे पानी, रूप बदल कर आवे दानी।
अंखियां मेरी नीर बहावें, कौन पिलावे मुझको पानी?
तुम बिन चले न सारी दुनिया, कितने रूप बदलता छलिया।
कण कण में तू करे बसेरा, मैं तू भेद किया यह दुनिया।

मैं का रूप हाथ में लोटा, दर दर पूछे तू क्यों रूठा?
अपनी कृपा मुझे तू दे दे, सुख दुनिया का सारा झूठा।
पिला रहा है कोई पानी, रूठे मिलती नहीं निशानी।
कौन रूठता कौन मनाता, मैं भी कौन हुआ अज्ञानी।

कोई राजा रंक भेद क्या, ज्ञानी अज्ञानी में बैठा।
मैं हूँ कौन ज्ञान उसका ही, मिटता सब सारा जग झूठा।
जीवन आता किससे पगले, सोच समझ ले हरि को जप ले।
दो दिन का यह रैन बसेरा, हरि गंगा में मन तू बह ले।

छोड़ यहाँ मैं उसकी दुनिया, जैसा राखे तप तू कर ले।
हरि हरि प्रीति बढ़ाता जा तू, वही यहाँ पर उसमें बह ले।
बदले रूप खिलावे छैला, अज्ञानी हम रोवे नयना।
किसने जानी उसकी माया, जप पायेगा दिल यह चैना।

## 84

नयन आंसू पास तुम न, दिल बता कैसे लगाये।
तड़फे है दिल यह मेरा, तू बता कैसे मनाये।
दिल नहीं लगता हमारा, यह हो गया सूना जहाँ।
नयन से है नीर बहते, कह दो कहें किसको यहाँ।

देख लो नजरें उठाकर, बहता नयनों से पानी।
दर्द दिल का यह रहेगा, न प्यार पाया जग फानी।
डगमगाती नाव मेरी, क्या नियति यह चाहती है।
बेवफ़ा क्यों हो गये तुम, सांझ ढलती जा रही है।

प्राण सारे भीग जाये, हरि मुझे बन्शी सुना दो।
हरि जपे तुमको रिझायें, नाथ गम सारे मिटा दो।
चरण में पड़ते तुम्हारे, इस जगत के तुम रचैया।
माफ कर देना अबल हम, बहती हैं मेरी अंखियां।

## 85

मन चुप हो क्या तू अब गाये, किसको अपना दर्द दिखाये।
इस जग का हरि ही रखबाला, सारे जग को वही चलाये।
नयन बहावे वह ना आवे, दिल की पीड़ा कौन बुझावे।
चाहत का अम्बार लगा है, हरि बिन कृपा ज्ञान ना पावे।

धरा न बोले गगन मौन है, कर विचार तू यहाँ कौन है।
मर्जी हरि की जग में आया, जायेगा ना चले जोर है।
जप हरि हरि उसकी ही दुनिया, मैं को तज दे नाचे छलिया।
आदि सत्य वह अन्त सत्य है, उसको भूला रोवें अंखियां।

अंधियारी रातों में मनुआ, दिल में दीप उसी का जलता।
डूबा मैं में भूला उसको, अहंकार से स्वयं को छलता।
हरि हरि गा मन ज्ञान जगावे, हरि बिन ज्ञान नहीं तू पावे।
दो दिन का यह रैन बसेरा, छला जा रहा नीर बहावे।

## 86

हरि आंखों को खोलो, बालक हम तेरे हैं।
तम हरो नाथ मेरा, अंखियां यह बरसे हैं।
क्यों भाग्य बना ऐसा, मुंह फेर नियति सोती।
क्या दोष हमारा है, अंखियां मेरी रोती।

जग के तुम पालक हो, तुम भाग्य विधाता हो।
दे प्यार न वंचित कर, जीवन की आशा हो।
हरि तुझे मनाये हम, आंसू बरसे रिमझिम।
ना छोड़ मुझे कान्हा, मैं हार गया ना दम।

जीवन आता तुझसे, ना रूठ कभी मुझसे।
प्रभु सदा करे सेवा, कम प्यार न हो हमसे।
प्रभु चरण पड़े तेरे, दे ज्ञान तुझे टेरें।
अज्ञानी बालक हम, पर भूल न हम तेरे।



## 87

दीन बन्धु दयालु तुम हो, हरि राख लो अपनी शरण।
ढूंढते तुमको सदा ही, हरि पा सके तेरे चरण।
सुमरण करें हम रात दिन, तुम बिन लगे न मेरा दिल।
प्रीति बढ़े हरपल तेरी, कर दो कृपा मैं हूँ अबल।

इस जगत के तुम रचैया, नाव मेरी के खिवैया।
लाज मेरी राखना प्रभु, बहती हैं मेरी अंखियाँ।
न पता जानूँ तुम्हारा, चल रहे चल चल गिरे है।
बहते नयनों से आंसू, खोजते तुमको फिरे हैं।

पास में हरदम हमारे, फिर क्यों लगे तुम दूर हो।
दिल नहीं लगता हमारा, तुम जिन्दगी की चाह हो।
सुखदाता सुख को मांगू, मैं प्यार को चाहूँ सदा।
नयन में हरि बसो मेरे, न फिर कभी हो ना जुदा।

## 88

हरि को जपो यहाँ मन, उसको पुकार ले तू।
कैसे जलन मिटेगी, जाने नहीं यहाँ तू।
तपते हुए हृदय को, बस एक वह दिलासा।
उस बिन न चैन आये, मन रख उससे आसा।

जब रोता तू पगले, बस में बता यहाँ क्या?
जब भी बरसे आंसू, पूछें बता हुआ क्या?
सुख दुख नियति खिलाती, सब ज्ञान वह जगाती।
बन कठपुतली नाचे, आंसू न रोक पाती।

मन कौन जानता है, दुनिया में रंग इतने।
अपने बने पराये, बने पराये अपने।
सब कुछ बदले पल में, नयन से बहे धारा।
कल क्या हो जानते न, होगा कहाँ किनारा।

थक हारा तू बैठा, नभ मौन उसे देखे।
हरि को पुकार ले तू, सब घट में है देखे।
सुन मन हरि को जपना, लहर बना तू बहना।
सागर है रूप हरि का, यह जान हरि न तजना।

## 89

जप ले मन और न भटक कहीं, ना और किनारा कोई है।
अंखियां रोई ना चैन मिले, जग का रखबाला वह ही है।
किसने देखे बहते आंसू, निज इच्छाओं में जीते सब।
पल दो पल के हैं याराने, यहाँ रंग बदलते पल में सब।

अंधियारी रातों का साथी, जलती दिल में उसकी बाती।
मैं छोड़ उसे जो जपता है, भय से ना फिर फटती छाती।
हरि जप सुन ले उसकी बन्शी, संगीत दिशायें गाती है।
स्वप्निल है यह सारी दुनिया, सुपना हरि का दुख हरती है।

मृग तृष्णा यहाँ जलाये दिल, दौड़े पर यहाँ न पाये जल।
अन्तस में मन झरना बहता, ली ले क्यों तू तड़फे हरपल।
सुख दुख का खेल नियति खेले, तप कर ले हरि संग हैं तेरे।
पल भर भी दूर नहीं हम से, वह धन्य यहाँ जो मैं गेरे।

## 90

अंखियां बरसे यह दिल न्हाये, कब से बैठे तुम ना आये।
मीठी है याद तुम्हारी प्रभु, चाहूँ जीवन में तू छाये।
प्रभु सदा तेरा स्मरण करते, मिल जाये हरि तेरी छाया।
अज्ञानी तेरा बालक हूँ, प्रभु रेाती है मेरी काया।

तेरी बगिया में खिले नाथ, तुम बिन न और कोई दूजा।
हरि दे हमको अपनी छैंया, बह रहे अश्रु करते पूजा।
ब्रह्माण्ड इशारे पर नाचे, तेरे गुण गाता जग सारा।
तुम कहाँ छिपे मोहन मुझसे, बहती नयनों से है धारा।

जीवन तेरा तू ही मालिक, छाती मेरी करती धक धक।
ना रूठ कभी मुझसे जाना, दो ज्ञान हरी पहुँचे तुम तक।
मेला दो दिन स्वप्निल दुनिया, मेरे सुपनों में तुम रहना।
तुम बिन होती नैया डगमग, मेरे नयनों में हरि बसना।



## 91

हरि कृपा करो जग के पालक, कण कण में तुम हरि स्वामी हो।
डगमग होती जब जब नैया, टूटे दिल की भी आशा हो।
खेवट तुम भूल नहीं जाना, मारग मेरा है अनजाना।
बहते आंखों से आंसू हैं, हरि मुझे प्यार अपना देना।

मैं उलझ गिरूँ हरि थाम मुझे, मुझमे मेरा बल कुछ भी ना।
अज्ञानी हूँ बहते आंसू, दे ज्ञान मुझे तुम बिन कुछ ना।
जपते ही रहे हम हरि हरपल, तुम कहाँ गये ढलता यह दिन।
नयनों से झड़ियाँ झरती है, ना मिलो यही रस बस जीवन।

तुम मुझको क्या छलता छलिया, मैं हार गया पड़ता पैयां।
तेरी दुनिया तू ही जाने, दे प्यार बह रही यह अंखियां।
खेला सुख दुख का पाप पुण्य, यह पार न हो गहरी नदिया।
इसे पार करा मेरे मांझी, यह रोती हैं मेरी अंखियां।

## 92

मन हरि हरि जप नहीं और है सुख, कहाँ जाये तेरी मंजिल क्या?
मृगमरीचिका में फंस हरपल, अंखियां रोवे न मिले छलिया।
बहते है नीर चढ़ा उसको, मर्जी उसकी से आये हम।
जपता जा चलता जा जग में, ना ज्ञान उस बिना पाये हम।

कोई है राजा रंक यहाँ, सब बने उसी की मर्जी पर।
वह पार करेगा नौका को, जप ले मन उसको वह हरि हर।
मन हरि हरि जप तेरे क्या बस, आवे सांसे उसको लेता।
उपजे हिय में जो ज्ञान यहाँ, मन सोच उसी को ले जीता।

सारी दुनिया का वह स्वामी, जप उसको कुछ भी और नहीं।
क्या जोर यहाँ मेला दो दिन, कब ले जाये वह और कहीं।
जो है जीवन जीना होगा, जैसा राखे रहना होगा।
उस कृपा मिले ना जग में सुख, जप उसे ज्ञान तुझको देगा।

## 93

तेरी दुनिया रास न आई, मुझको भूल गया हरजाई।
इन नयनों से बहता पानी, डूब नहीं क्यों दिल यह जाई।
तुम बिन भटकूं रोवे अंखियां, नहीं मिलो तुम मुझको छलिया।
शरण मुझे तू रख ले अपनी, अज्ञानी मैं दे दे छैंया।

निशदिन देखूँ बाट तुम्हारी, कब देखे तू मुझे मुरारी।
चल चल कर मैं हार गया प्रभु, तेरी यादें लागे प्यारी।
अपना मुझे बना ले छलिया, प्रीति बढ़ा ले रोवें अंखियां।
तुम बिन सूना जग यह लागे, कहूँ किसे मैं दिल की बतियां।

हरि हरि जपें नाम हरि तेरा, ना जाने कब होय सुबेरा।
अंखियां बरसे चैन मिले हरि, यादों का ना टूटे घेरा।
दास तुम्हारे अपना लो हरि, खता हुई क्या मैं ना जानूं।
पार करा दे मुझको नदिया, तुम बिन और न कोई जानूं।

## 94

हरि हरि जपें हरी को पूजें, ज्ञान हमें दे पथ जो सूझे।
बहते आंसू तुझे पुकारे, बता हमें तू कैसे रीझे?
गीत प्यार के गा पागल मन, प्यासे प्राण खोजते छलिया।
नीर बहे रोवे यह अंखियाँ, पीड़ घनेरी स्वप्निल दुनिया।

उसकी मर्जी चले इशारे, जाये कहाँ कोई न जाने।
हरि हरि भज बस वह ही है सुख, सांच कहूँ मैं मान दिवाने।
हरि जपो ज्ञान वह देगा, पीड़ा तेरी सब हर लेगा।
कर ले मन विश्वास उसी पर, नौका तेरी लिये चलेगा।

दर्द बह रहा इस दुनिया में, खोज रहे सब हरि की छैंया।
दौड़े मन चाहत ले ले कर, नीर बहावे पल पल अंखियाँ।
तृष्णा में हरि अब ना भटका, बढ़े प्रेम तेरा हरि हरपल।
अपना साया मुझ पर रखना, इन नयनों से गिरता है जल।



## 95

बन्शी की धुन सुन नाचे तन, जग के भूलूँ मैं सारे गम।
प्यार तुम्हारा बढ़ता जाये, इन आंखों मे बस जाओं तुम।
मेरे जीवन की तुम आशा, अंधियारे में तुही है किरण।
अपनी कृपा बनाये रखना, मिले तुम्हारे मुझे हरि चरण।

मेरे खेवट भूल न जाना, तुझे पुकारूँ अब ना छिपना।
मेला दो दिन का यह सारा, अब तो हरि मेरी सुन लेना।
आंसू मेरे गिरते झर झर, अंखियां खोजे गया तू किधर।
कैसे इस मन को समझाऊँ, कुछ ना जानूं जाऊँ मैं किधर।

मेरे जीवन की तुम आशा, ज्ञान हमें दे पाये तुमको।
निशदिन सांझ सुबेरे भजकर, आंसू हार चढाऊँ तुमको।
जग में इनका मोल नहीं है, बहते इन आंखों से मोती।
लाज राखना शरण तुम्हारी, सकल सृष्टि यह तुझे पूजती।

## 96

मिले दिशा ना तुम बिन रसिया, पार लगा दे मेरी नैया।
अगम अगोचर पार न तेरा, फिर भी ढूंढे मेरी अंखियां।
तुझे बसाऊँ मैं नयनों में, निशदिन तेरी करूँ मैं पूजा।
तुमसे बढ़कर और न कोई, मेरे सुपनों में भी छा जा।

ऋषि मुनि तेरा करें है स्मरण, तुमको हरपल जपते रहते।
नाम तेरे में अमृत टपके, इसको पी पी कर ना थकते।
सकल विश्व के तुम हो स्वामी, सभी तुम्हारा प्यार चाहते।
मुझे भूल ना दास तुम्हारा, इन आंखों से आसू बहते।

चाहूँ सदा तुम्हारी छैंया, नाथ पकड़ ले मेरी बैया।
तुम बिन सूना यह जग लगता, देख हमें ले बहती अंखियां।
जपते रहे सदा ही तुमको, मेरे नयनों में बस जाओ।
प्यार तुम्हारा पा लें हरि हर, इस जीवन को सफल बनाओ।

## 97

हरि हरि तेरी करते पूजा, जो दर्द छिपा उसको लख जा।
जन्मों से दास तुम्हारा हूँ, मुरझाया सुमन खिला अब जा।
जग झूठ स्वप्न दुनिया सारी, छल तू भी क्या करता छलिया।
बैचेन मेरा दिल डोल रहा, दे प्यार मुझे पड़ता पैंया।

जग भूल भुलैया नीर बहें, मुझे तू भी नाथ भुलावा दे।
जग के भूलूं मैं सारे गम, चरणों में जगह मुझे हरि दे।
दे ज्ञान हमें मिलता तुमसे, जीवन की सभी बहारें तुम।
ना रूठ कभी मुझसे जाना, खिलते तेरी बगिया में हम।

मैं छोड़ कहाँ तुमको जाऊँ, दीखे ना पथ अब रह ना चुप।
अज्ञानी मैं तू सत्य सदा, आंसू गिरते मेरे टप टप।
प्रभु सदा मनायेंगे तुमको, तुम पीठ न मुझसे कर लेना।
मैं अबल नाथ बालक तेरा, यह जान क्षमा तुम कर देना।

## 98

हरि ओम जपो मन उसे जपो, हरि बांह पकड़ कर चले चलो।
सबका सर्जक पालक तारक, मन भूल न उसको जपे चलो।
कहाँ जाये खबर ना नैया, बस मांगो मन हरि की छैयां।
मन के भय मिट जायें सारे, जब लगे साथ में है सैयां।

नौका को पार लगावेगा, आंसू तेरे वह पोछेगा।
विश्वास करो मन ओम जपो, दिल का वह कमल खिलावेगा।
हरि ओम जपो मन ओम जपो, सांसों में स्वर बाजे उसका।
मैं रहे न उसकी ज्योति रहे, तब चैन मिले सब कुछ उसका।

मन याद करो बरसे अंखियां, प्यारा लगता है वह छलिया।
जग के वैभव फीके पड़ते, सुन ले अनहद नाचे जीया।
जप क्षण भंगुर यह दुनिया मन, पल मिले यहाँ कुछ हरि का बन।
वह आदि सत्य है अन्त सत्य, ना भूल उसे तू बसा नयन।



## 99

हरि ओम जपो मन उसे रटो, मेला दो दिन का सारा है।
मैं छोड़ उसे पागल भज ले, मिल जाये हरी सहारा है।
हरि ओम यहाँ तू यहाँ कहाँ, अब है कल हो ना पता कहाँ।
जो नीर बहें वह चढ़ा उसे, जप खेल उसी का जान यहाँ।

हरि हरि जप मन तू कर ले तप, कठपुतली उसकी वह ही सब।
मैं हटा सुमर उसको चल ले, तू कौन यहाँ जाने सब रब।
हरि हरि जप ले विश्वास करो, इस दिल को मिल जाये चैना।
हरि बिन रोती है यह अंखियां, मैं सांच कहूँ सुन ले बयना।

हरि प्रीति बढ़े यह नयन झरे, दिल का मुरझाया सुमन खिले।
बहता जाये वह बना लहर, मर्जी सागर वह लिये चले।
हरि हरि जप मन उसका ही सब, स्वप्निल दुनिया है यह सारी।
मैं कौन यहाँ उसकी लीला, मैं छोड़ वही है दुखहारी।

## 100

क्यों इन्तजार हमको, आयेगा वह मिलने।
नयन ने नीर गेरा, न कह सका हो अपने।
बहे लहर है बहती, जाये कहाँ ठिकाना।
सागर मर्जी बहती, जहाँ है वह ठिकाना।

हरि गीतों को गा ले, मर्जी उसकी चलती।
आये उसकी मर्जी, जायें उसकी चलती।
करो भरोसा हरि पर, दो दिन खेला सारा।
पागल बन क्यों फिरता, जप नाम वह अधारा।

हरि को जपो खिवैया, मन में जलन न होगी।
सब कुछ उसका जानो, अपनी नहीं चलेगी।
कितनी योनी जग में, मन घूमती फिरें है।
नियति सभी की अपनी, अंखियां यहाँ झरें है।

हरि एक नाम सांचा, सबने इसको वांचा।
पतवार दे हरी को, ले कर मैं क्यों नाचा।
हरि हरि जप ले मनुआ, वह खेले है छलिया।
उसके चले इशारे, मैं छोड़ो पड़ पैयां।

## 101

हरि दर्शन को तरसे अंखियां, वह न मिले ढूंढू मैं छलिया।
मेरी तेरी प्रीति पुरानी, क्यों तड़फावे मुझको रसिया।
नाम तुम्हारा प्यारा लागे, अमी झरत जियरा खिल जावे।
दास बना लो मुझको अपना, नित उठ दर्शन तेरे पावे।

पी पी रटूं पिया ही प्यारा, उस बिन सारा जग यह खारा।
दिल की मेरी कौन सुनेगा, पी न सुने जग से मैं हारा।
बहते आंसू हार चढ़ाऊँ, बता तुझे कैसे समझाऊँ।
अब मुझसे पी रहा न जाता, बाह बढ़ा दे तुझे मनाऊँ।

नाम तेरे की जपूं माला, मुझे पिला दे अपनी हाला।
खो जाऊँ बस सुपने तेरे, छोड़ नहीं अपना ले लाला।
पी पी रटू मोहि तू भावे, क्यों ना मुझसे प्यार जतावे।
बनी विरह में पागल मैं तो, पल पल मेरे आंसू आवे।

## 102

यह नीर है बहते रहे, आये न तुम हम क्या कहे?
हरि जान लो मैं हूँ अबल, बस कुछ नहीं आंसू बहें।
सर्जक पालक हो तुम्ही, तेरा यहाँ पर राज है।
सब जीव चाहे तुझ कृपा, तू शक्ति का भण्डार है।

तेरी लगे यादें मधुर, खोई हुई मेरी डगर।
तम में जला दे दीप तू, मैं पा सकू तेरी खबर।
संसार के स्वामी तुम्ही, तुम बिन बता किसको कहें।
नज़रे उठा कर देख लो, इन नयन से आंसू बहें।

तुम बिन नहीं लगता जिया, मैं खोजता तुमको पिया।
लग रहा डर रात काली, अब तुम जला दो हरि दिया।
हरि कृपा मिल जाये तेरी, आशा तुझ पर है मेरी।
अंधेरा है डगमगाती, पार करो नौका मेरी।



## 103

आंसू आये तुम मिलो नहीं, किसको अब दर्द दिखायें हम।
जब तारनहार छिपा बैठा, अब किसको यहाँ मनाये हम।
यह नीर बहें ना कभी रूके, यह बहें सदा जब तक जीवन।
इसमें ही तेरा प्यार छिपा, ना रूके कहूँ तुमको भगवन।

यह विरह लगे तेरा प्यारा, दो दिन का जीवन बीतेगा।
तेरी यादों में मिटूँ सदा, प्राणों में मेरे गूंजेगा।
तुम बिन सारी दुनिया नीरस, आंसू बहते मेरे झर झर।
मैं हाथ जोड़ कर द्वार खड़ा, तू देख मुझे ले अब हरि हर।

तुम मिलो न महके यह बगिया, कह दे कसूर है क्या छलिया।
जाता जीवन राह निहारूँ, आती भर भर कर यह अंखियां।
हरि सदा मनायेंगे तुमको, आती सांसें यह जब तक है।
इन सांसों का तू ही मालिक, दे ज्ञान हमें अज्ञानी है।

## 104

हरि सदा जपेंगे हम तुमको, ना इन्तजार करवा, अब आ।
नयनों से बहता है पानी, दिल क्यों पसीजता ना, अब आ।
हरि दास तुम्हारे रोते हम, क्यों आंख मूंद कर सोते हो?
तुम बिन ना दिल का कमल खिले, दे प्यार हमें तड़फाते हो।

प्यासे है प्राण पुकार रहे, तुम बिन जीवन क्यों यहाँ रहे।
कण में बास तुम्हारा जब, क्या खता बता क्यों छिपा रहे।
तू रास रचा ले अब रसिया, मैं छला गया तेरी दुनिया।
कुछ पल महके, जीवन चहके, कुछ पल बाकी सुन ले छलिया।

हरि हरि की धुन प्यारी लागे, बन्शी की धुन सुन मन नाचे।
संगीत दिशाये गाती हैं, अब देर न कर तू क्या सोचे?
आंसू बहते इन नयनों से, जल में रह कर भी हूँ प्यासा।
हरि प्यार मुझे तू अपना दे, मेरे जीवन की तू आसा।

## 105

ओम तू है कौन कह दे, बहती आंखों से धारा।
मैं भटकूं जग के अन्दर, तू बना मेरा सहारा।
मैं जपूं तुमको यहाँ पर, अंखियां आती यह भर भर।
ना सहारा और कोई, देख ले नज़रे उठा कर।

प्यार तेरा चाहते हैं, रोती हैं मेरी अंखियाँ।
भूल ना जाना मुझे तुम, पड़ता मैं तेरे पैंया।
नाचता ब्रह्माण्ड सारा, बना तू ही सृजनहारा।
मैं मनाऊँ तुझे कैसे, चल रहा दे दे सहारा।

लाज रखना प्रभु सदा तुम, दास हूँ मैं तो तुम्हारा।
नाव यह जाये कहाँ पर, तू खेवट मैं तेा हारा।
नयनों से बहता पानी, शरण में रख मैं न ज्ञानी।
मैं लिये झोली खड़ा हूँ, तू सदा का नाथ दानी।